धन्यवाद ।

हम अपने श्रीमान् महाराजाधिराज महाराजा जी श्री १०८ श्री सज्जनसिंहजी सा० बहादुर रतलामनरेशको शुद्धअन्तःकरणसे धन्यवाद देते हैं कि, जिनकेराज्यमें हम आनन्दपूर्वक अपना पोषण तथा उनकी गुणग्राहकता द्वारा सदैव आनन्द प्राप्त करते हैं सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर इनकी दिन प्रति सर्व प्रकार वृद्धिकरे ॥

पुनः श्रीयुत खान बहादुर खुरशेदजी रुस्तमजी दीवान साहिब रतलामके अत्याभारी हैं कि, जिनके शासनसमय में हमलोगों के उत्साहने उन्नतीपाई ।

तत्पश्चात् विद्वद्वर डी० एफ० वकीलसा० महाशय मिन्सिपाल सेन्ट्रल कालेज रतलामका कृतज्ञहूं कि, जिनकी सहायता और पूर्णअनुग्रह से नूतन पुस्तकोंके निर्मित करनेमें हमारा उत्साह बढताहै॥

अन्तमें हिन्दीभाषाके हितकारी और उत्तेजक श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी की परोपकारता सराहनीयहै जिन्होंने इसपुस्तक के मुद्रितार्थ स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" यंत्रालय तथा द्रव्यका आश्रयदेकर देशभाषा भंडारकी पूर्ति की ॥

अर्पण पत्रिका।

श्रीयुत परम मान्यवर !

रा० रा० पंडित विनायकराव साहिब

सुपरिंटेंडेंट मेल नार्मलस्कूल जबलपूर.

महाशय ! आपकी कोमल प्रकृति, सन्माननीय तथा परोपकारी स्वभाव नीतिज्ञता तथा विद्या वृद्धि शीलता. देख बहुतदिनों से इसीविचार में था कि. कोई ऐसी पुस्तक आपके अर्पणकरूं जिसकी हिन्दीभाषा के भंडारमें न्यूनता हो, सो आज उस कृपालु परमेश्वरकी सुदृष्टि से यह लघु पुस्तक आपके आज्ञानुवर्ती सेवक द्वारा विनय-पूर्वक अर्पण कीजाती है आशा है कि, आप स्वीकारता द्वारा इस सेवक को आभारी करेंगे.

ग्रंथकर्ता.

भूमिका।

बहुधा जहाँतक देखागया, उससे यही ज्ञात होता है कि, हरएक देशकी भाषाओंमें कहावतें होती ही हैं यहांतक कि, इनके उपयोग बिना वार्तालापमें सरसता नहीं आती। ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं जो थोडी से थोड़ी कहावतोंका उपयोग न करता हो परन् कई भाषाओं में तो इनके ग्रंथके ग्रथपाये जाते हैं॥

शोकका स्थल है कि, हमारी मातृभाषा हिन्दीमें कहावतोंका अधिकतासे उपयोग होते हुए भी बहुधा लोग उनके आशयसे अज्ञात रहते हैं इसका यही कारण है कि, सम्प्रति ऐसी पुस्तकों का इस भाषा के भंडार में अभाव है॥

इसी अभाव को दूरकरने के निमित्त हिन्दी अंग्रेजी आदि मुख्य २ छः भाषाओं की कहावतें शुद्धहिन्दी में विवरणसहित इस पुस्तक में संग्रह की गई हैं कि, जिससे हिन्दी के प्रेमीगण सबभाषाओं की कहावतों का ज्ञान प्राप्त करें॥

कहावतोंके निर्माणका मूलकारण सोचने से यही ज्ञात होता है कि, प्राचीन समयके बुद्धिशाली पुरुष अपनी कविता में ऐसे २ वाक्य रखते थे जो छोटे होकर बहुत अर्थ प्रकाश करनेवाले हों तथा उनके अभीष्टअर्थ को पुष्ट करते हों। जब अन्य लोगों ने उनकी कविता में ऐसे उपयोगी वाक्य पाये तो वार्तालापमें भी उनका उपयोग करने लगे। इस प्रकार ज्यों २ समय व्यतीत होताचला त्यों २ लोग उन वाक्यों को विशेष काममें लानेलगे यहां तक कि, फिर उन कहावतोंमें बहुधा गूढ़ी रहने सर्व मान्य तथा रस, ज्ञान, गर्भित अर्थ तथा भाषाका शृंगार होनेसे सभी लोग उनका उपयोग करने लगे तथा विशेषकर विद्वान् और रसीले लोगों ने तो इन्हें सादर ग्रहणकिया तथा अब भी ऐसाही देखा जाता है॥

अनुक्रमणिका.

कुसुम.	विषय.	पृष्ठ.
१	हिन्दी	१
२	अंगरेजी	११३
३	गुजराती	१३६
४	संस्कृत	१६७
५	फारसी	१८२
६	मरहठी	१९६

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ॥

कहावते कल्पद्रुम।

सटीक।

प्रथमकुसुम।

हिन्दी।

१ आप भला, तौ जगभला ॥ जब किसीकी अच्छी चाल चलन के कारण सर्व मनुष्य उससे अच्छा बर्ताव करते हैं तब लोग यह कहावत कहते हैं ॥

२ आवे न जावे, चतुर कहावे ॥ जब मनुष्य कोई काम कहींसे करके लाताहै और घरवाले उसे उस कामके करनेमें न्यूनता बताकर निन्दित करतेहैं अथवा जब कोई आदमी किसीकाममें कुछभी परिश्रम न करके चतुर बनना चाहताहै तब यह कहावत कहतेहैं ॥

३ आदमी जानिये बसे, सोना जानिये कसे ॥ ...
जब कोई नया आदमी कहीं जाकर रहनेको स्था...
चाहताहै तब लोग उसकी चालचलन के विषय...
यह कहावत कहतेहैं ॥

४ आबरू बचे तो जान जाना तुच्छहै॥प्रति...
रहते हुए किसी आदमीको क्लेश उठाना पड़े तब ऐ...
कहतेहैं ॥

५ अपनी गलीमें कुत्ता शेर ॥ जब कोई नि...
आदमी अपने अधिकारमें, या अवसर पाकर, नि...
धार बलवान्को सताताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

६ अपनी २ ढपली अपना २ राग ॥ ...
प्रत्येक मनुष्य अपनी २ तानमें अलग २ मस्त र...
तब ऐसा कहा जाताहै ॥

७ अटका बनियाँ, देय उधार ॥ जब ...
सी दूसरेको अपने मतलबके लिये कुछ...
... की इच्छा नहींहै तब ऐसा कह...

८ अपने मुंह मियाँ मिट्ठ ॥ जब कोई अपन मुंहसे अपनी बडीही प्रशंसा करताहै तब ऐसा कहतेहैं।

९ अपने मुंह धनावाई ॥ यहभी उपरोक्तानुसारहै

१० अटकल पची डेढ सौ ॥ जब कोई विना विचारे अटकलसे ऐसी बात कहताहै जो यथार्थमें सच निकल जाती है तब ऐसा कहतेहैं ॥

११ अपना २ कमाना, अपना २ खाना ॥ जब किसी समाज या कुटुम्बके आदमी मिलजुल कर नहीं रहते या काम नहीं करते वरन अलग २ वर्ताव करते तब ऐसा कहाजाताहै ॥

१२ अपना वही जो आवे काम ॥ जब कोई मनुष्य किसीके काम आताहै तो उसकी प्रशंसामें या जब कोई निजका मनुष्य काम पड़ेपर मुंह मोड़ देताहै तो उसकी यथार्थता जतानेको ऐसा कहतेहैं ॥

१३ आदमी२अन्तर, कोई हीरा कोई कंकर॥ जहाँ अच्छे बुरे बहुतसे आदमी एकत्र होतेहैं तहाँ

व्यक्ति विशेष प्रगट करनेको ऐसा कहा जाताहै ॥

१४ आपचले, तब चिट्ठी काहेकी ॥ जब कोई मनुष्य किसी जगह जानेका इरादा कियेहो उसी समय यदि कोईआकर कहे कि वहाँ को (जिस जगह जाने का उसका इरादा है) कुछ कहना तो नहीं है तब ऐसा कहते हैं अथवा जब कोई काम मनुष्य स्वतः कर सक्ता है और दूसरे की अनुमति लेने लगे तब भी ऐसा कहते हैं ॥

१५ अपना दाम खोटा परखैया को क्या दोष ॥ घरका आदमी तो अवगुणी है परंतु जब कोई दूसरा उसे प्रगट करता है तो वह क्रोधित होके लड़ने को तय्यार होता है तब ऐसा कहते हैं अथवा जब अपना कोई आदमी दूसरे का बिगाड़ कर देता है और दूसरा भी उसका बदला लेना है तब घरके लोग ऐसा ...ने लगते हैं ॥

१६ आप मरे जग डूबा ॥ जब कोई अकेला

आदमी जिसका कोई सगा संबंधी नहीं है मरनप्राय होता है तब ऐसा कहता है ॥

१७ आगे नाथ न पीछे पड़ा ॥ (याने भैंसन तो नाकमें नथी है और न पीछे पड्डा याने बचा है) जब आदमी को किसी कामके करने में किसी भी प्रकारकी कुछ रोक नहीं होती तब ऐसा कहते हैं ॥

१८ आप करे सो काम, पल्ला होय सो दाम ॥ जब कोई काम दूसरे के बल या उधारके भरोसे बिगड़ जाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१९ आशा का मरे, निराशा का जिये ॥ जब कोई आदमी किसीके यहाँ किसी काम के लिये जाता है और कहता है कि भाई "हाँ, ना" कुछभी तो कहो और जब वह कुछ भी स्पष्ट उत्तर नहीं देता तब ऐसा कहते हैं ॥

२० आठ कनौजिया नौ चूल्हा॥ (कनौजिया ब्राह्मणोंमें इतना छूआ छूतका डर रहता है कि अपने

चूल्हे की आग तक दूसरे को नहीं देते) जब एक समूह या कुटुम्ब के आदमी बिखरकर अलग २ काम करते और आपसमें इतना बुराबर्ताव रखते हैं आपसमें लेन देन तक नहीं करते चाहे दूसरेसे करें तब ऐसा कहते हैं ॥

२१ अपना ठेंठ न देखें, दूसरे की फुली निहारें ॥ (अपनी फूटी आंखका ध्यान न करके दूसरे की फूली देखना) जब कोई मनुष्य अपने बड़े दोषपर कुछ खयाल न करके दूसरे के तनिक दोषकी आलोचना करता तब ऐसा कहते हैं ॥

२२ अकल मन्दको इशारा, मूर्ख को तमाचा जब जरासे कहनेसे बुद्धिमान् तो समझ जाता पर मूर्ख नहीं समझता तब ऐसा कहते हैं ॥

२३ आगे का गिरते ही पीछे का होशयार ॥ जब आदमी किसी काममें नुकसान उठाता है, दूसरा आदमी उसका कारण जान फिर उसी का

को करके लाभ उठाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

२४ अधिका भलो न बोलनों अधिका भली न चुप ॥ जब आदमी कोई काम या बात अधिकतासे करता है तो अवश्य हानि उठाता है तब लोग ऐसा कहते हैं ॥

२५ आधीछोड आखीको नहीं जाना ॥ जब कोई हाथमेंकी थोडीप्राप्ति छोडकर बहुत प्राप्तिके लिये दौडताहै कि जिसके मिलनेकी पूरी आशानहीं है तो दोनों हाथसे जातेहैं तब ऐसा कहाजाताहै ॥

२६ आम खानेसे काम कि पेड गिननेसे ॥ जब कोई आदमी अपने मतलबकी लागूबातें छोडकर यहाँ वहाँकी बात करने लगता है तब ऐसा कहते हैं ॥

२७ आंधरोंमें कानेराजा ॥ जहाँ कहीं मूर्ख समाजमें कोई अल्पबुद्धिवाला आदमी बडी ज्ञानकी बातें अभिमान पूर्वक कहता है तो उसके लिये यह कहावत कही जातीहै ॥

२८ आंसू एक नहीं कलेजाटूक २ ॥ (१) जब किसी ज्ञानी आदमी पर अधिक दुख बीतताहै तो वह ऊपरी रोनागाना न करके हृदयमें अति शोकित होताहै (२) जब कोई आदमी दुखसे दुखीतो नहीं होता लोगोंको बतानेके लिये खाली बहाना करताहै तबभी ऐसा कहतेहैं ॥

२९ अपकारके बदले उपकार ॥ प्रथम तो लोग उपकारके बदले अपकार करते हैं अथवा उपकार के बदले उपकार करते ही करतेहैं पर जब सज्जन लोग अपकारके बदले उपकार करतेहैं तब यह कहा जाताहै ॥

३० आंख बची माल दोस्तोंका ॥ जब कोई मित्र आंख बचाकर किसी सेवकूफका माल उड़ाने तो यह कहावत कहीजातीहै ॥

आंखें हुई चार तो जीमें आया प्यार ॥ विपत्तमें कोई अप्रसन्न होजाताहै पर ज

साम्हना होताहै तो अवश्य चित्त नम्र होकर अप्रसन्न भाव चला जाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२२ आंखोंहुई ओट, तो जीमेंआया खोट॥(१) जब मनुष्यमें कोई आदमी प्रशंसा करता परंतु परोक्ष में निन्दा या बुरा करताहै तब कहतेहैं (२) जब आंखोंके मुलाहिजेमें कान अच्छा नहींहोता तबभी ऐसा कहतेहैं॥

२३ आंखका अन्धा गांठका पूरा ॥ जब कोई आदमी देखनेमें तो बेवकूफ सा पर अपने मतलबको होशयार होता तब ऐसा कहतेहैं ॥

२४ आंखों देखी मानिये कानों सुनी न मान॥ जब किसी विश्वासनीय पुरुषके मुहकी सुनी बातमें ...गर पड़जाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२५ आग लगे तबकूंआ खोदना ॥ किसीकाम ...पहलेहीसे तो कुछ प्रबन्ध न करना पर जब सिरपर ...वे तो फिर प्रबंध करनेको जो दौड़ताहै उसकेलिये ...कहा जाताहै ॥

२६ आंख कानमें चार अंगुलका फर्क ॥ क[illegible]
किसी सुनी और देखी हुई बातमें फर्क पडताहै त[illegible]
ऐसा कहतेहैं ॥

२७ ईमान तो सब कुछ है॥ जब कोई आद[illegible]
ई मानदारीके साथ चलनेपर कुछ हानिउठाकर शो[illegible]
फरमेलगताहै तब ऐसा कहते हैं ॥

इत्तिफाक़ बडी चीजहै ॥ यदि आदमीके पा[illegible]
कुछभी नहो पर सब आदमियोंसे मेल होतो ऐ[illegible]
कहते हैं ॥

३९ इकलख पूत सवालखनाती ⎫जब किसी[illegible]
तिस रावण घर दियान बाती ⎭बुरेदिन आं[illegible]
और हरप्रकारकी क्षति दिनप्रति होतीजाती तब अथव[illegible]
जब किसी आदमीकी नीयत बहुतही बिगडजाती[illegible]
तो उसकेलिये भी ऐसा कहतेहैं ॥

१० [illegible] शौकीनखर्चके कोता ॥ जब को[illegible]
आदमी [illegible] आराम तो अधिक चाहताहै प[illegible]
[illegible] तब ऐसा कहते हैं ॥

४१ इस हाथदे इस हाथले ॥ जब कोई अच्छे कामका अच्छाफल और बुरेकामका बुरा फल तुरन्त पाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

४२ उँगली पकडते पहुंचा पकडा ॥ थोडा सिल सिला जमाते २ जो अपना बडा काम साधलेतेहैं उनके विषयमें यह कहा जाताहै ॥

४३ ऊंटचढे कुत्ता काटे ॥ जब आदमी किसी कामको अत्यंत डरके साथ करताहो कि जिससे किसी प्रकारका दुःख पहुंचना असंभव है यदि तिस परभी दुःख मिले तब ऐसा कहतेहैं इसका अवसर विशेषकर उस समय आजाताहै जब किसीकोबुरे दिनोंमें विपरीत बुद्धि होजानेके कारण दुःख पहुंचताहै ॥

४४ ऊजड खेडा, नाम निवेडा ॥ जब किसी एकडा आदमीकी बातचीत कीजातीहै और कोई उसके विशेष निर्णयको निकालनेमें असमर्थ होजाताहै तो ऐसा कहताहै ॥

४५ उखलीमें सिर दिया, मूसलोंका क्याडर
जब मनुष्य कोई काम (चाहे भला हो या बुरा) क
नेपर उतारूहोताहै और दूसरे लोग उस काममें दुःख
डर बताने लगतेहैं तो वह धैर्यवान् यह कहावत क
लाताहै ॥

४६ ऊंटकेमुंहमें जीरा ॥ जिसको इच्छा
बहुतहै पर थोडामिले तब ऐसा कहते हैं ॥

४७ उतावला, सो बावला ॥ जब आदमी
काम जल्दी २ करके बिगाड़देता या हानि उठ
तब उसके लिये ऐसा कहतेहैं ॥

उतराघाटी, हुआपाटी ॥ (जबतक अन्न
नीचे नहीं उतरता तबतक यह भोजन क
परंतु जब गलेसे नीचे उतरा कि मट्टी होगया)
कोई पदार्थ या मनुष्य कार्य होजाने पर नि
होजाता तब उस पदार्थ वा मनुष्यके लिये ऐसा
उल्टा चोर, कोतवालै डांटे ॥ जब

मनुष्य अपराध करके उस मनुष्य पर जिसका अपराध किया गया है घुड़कनेलगे या उसे डरवावे तो ऐसा कहते हैं ॥

५० ऊंट वह, गधा कहे कितना पानी ॥ जब किसी कामको सामर्थ्यवान् पुरुष भी न करसके या करके हानि और निन्दा पावे और उसीको तुच्छ तथा असमर्थ मनुष्य करनेका साहस करे तोऐसा कहते हैं॥

५१ ऊंट दुल्हा, गद्धा प्रोहित ॥ जब किसी तुच्छ या नीचकी प्रशंसा वैसाही आदमी करे तब ऐसा कहते हैं ॥

५२ ऊंची दुकानका, फीका पकवान ॥ जिन लोगोंकी बड़ी तारीफ हो और उनका काम बिलकुल प्रशंसाके विरुद्ध होता है तब यह कहावत कहते हैं ॥

५३ एकतवेकी रोटी क्या छोटी क्या मोटी ॥ जहां एकही कुटुम्बके या एकही पदार्थके हिस्से अलग २

होनेपर कोई आदमी एककी निन्दा और दूसरेकी प्रशं-सा करे तब ऐसा कहा जाता है ॥

९४ एकान्त वासा, झगडा न झांसा ॥ जहाँ दस आदमी होते वहाँ कुछ न कुछ गड़बड़ अवश्य होती है उस समय या इकला मनुष्य अथवा एकान्त वासी (साधु) इस कहावतको काममें लाते हैं ॥

९५ एकम्यानमें, दोतलवारें ॥ जब किसी स्थानमें दोदेढ पुरुषोंके वास होनेका अवसर आने लग-ता है तब यह कहावत कहीजाती है ॥

९६ एक बांबीमें दो सांप॥ उपरोक्त अनुसार है।

९७ एकनभा छत्तीसरोगटाले ॥ (जब कि-सीविषयमें अकेला "ना" कहदिया जाता है औ बहाना करनेकी आवश्यका नहीं रहती) जब को मनुष्य किसी बातपर "ना" कहदेता है तब ऐसे कहते हैं ॥

९८ एकपंथ, दोकाज ॥ जब आदमी एक

मको जाताहो और उसमें दूसरे प्रकारका काम या लाभ होजाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

५९ एकपर एक ग्यारह ॥ जिस संकष्ट स्थानमें या आपत्ति समयमें एक आदमी को दूसरा आदमी सहायक मिलजावे तो उसे ग्यारह आदमियोंके बराबर होजाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

६० एक२बात,नौ नौ हाथ ॥जब आदमी एक२ बातको घंटों तक घोलता है तो ऐसा कहा जाता है ॥

६१ एक हाथसे ताली नहीं बजती ॥ जब दो आदमियोंमें तकरार होती है और एक आदमी अपना आपतो कुछभी नहीं बतलाता बरन दूसरेके मत्थे सब अपराध लगाता है तब लोग ऐसा कहने लगते हैं ॥

६२ ओछोंके पास बैठकर, सुघरोंकी पतजाय आदि दुर्जनकेसाथ सज्जनका संग होतो उसकी मान हानि होनेपर ऐसा कहते हैं ॥

६३ ओछेकी प्रीत, बालूकी भीत ॥ तुच्छ

आदमी जब तनिक कारणही से प्रीति तोड़ देताहै
ऐसा कहतेहैं ॥

६४ औवट चले, चौपट गिरे ॥ जब कोई का
रीति विरुद्ध किया जाताहै तो अवश्य पूरी २ हा
होती है तब दूसरे लोग ऐसा कहतेहैं ॥

६५ औरतोंका फन्दा बुरा ॥ (इस संसार
सज्जनोंने स्त्रियोंके लिये मायाकी पदवीदीहै यथार्थमें ज
तक स्त्री नहीं मनुष्य हरप्रकार से बेफिक्र रहताहै स्त्री हु
कि अनेक प्रकारके सांनारिक कामोंकी चिन्तामें प
कर मछलीकीनांई तड़पताहै जिनको स्त्री प्राप्त न
हुई वे उसे सुखदाई समझकर इच्छा करतेहैं
सज्जन पुरुष यह यथार्थ कहावत कहतेहैं ॥

६६ अंधेके हाथ बटेर लगी॥ जो मनुष्य कि
कामके करनेमें बिलकुल असमर्थ हो या उसके
कार्य सुफल होनेकी किसीको किञ्चित् आशा भी
और यदि वह उस काममें सफलता प्राप्त करे तो
। जाताहै ॥

६७ अंधी पीसे कुत्ते खाय॥ जब कोई काम अज्ञानी पुरुषसे बड़े परिश्रमके साथ किया हुआ अविवेकके कारण व्यर्थ जाताहै या किसी पुरुषार्थीका अधिक परिश्रमसे कमाया हुआ धन लुचोंके द्वारा उड़ाया जाताहै तब ऐसा कहतेहैं॥

६८ अंधेर नगरी बेबूझ राजा॥ जिस देशमें हर-काम अविवेकतासे होता और भलाबुरा कोई नहीं पूछता तब ऐसा कहतेहैं॥

६९ अंधेकी जोरूका खुदा रखवाला॥ जब किसी मनुष्यका धन योग्य प्रबन्धकर्ता के न होनेपर भी नाश नहीं होता तो लोग ऐसा कहतेहैं॥

७० अंधेके आगे रोना, अपनी आँखें खोना॥ किसी बेदर्दीके आगे जब अपना दुःख वर्णन किया जाताहै और जब वह कुछ भी ध्यान नहीं देता तब ऐसा कहाजाता है॥

७१ कांखमें लड़का, गांवमें टेर॥ जब पदार्थ

रखता हो और कोई पड़ा बड़ा देखना फिर
कहतेहैं ॥

७२ कामको गदा, खानेको गधा ॥ जब कं
भी अपने प्रयोजनके लिये तो सेवाकरे पर दूसरे
को मुंह छिपावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

७३ कमखर्च, बालानशीन॥जब कंजूस आर
र पानेकी इच्छा करता या जो कम खर्च कर
प्रशंसा पाताहै तब यह कहावत चरितार्थ होतीहै

७४ कहें खेतकी, सुनें खलियानकी ॥ ज
कुछ और कही जावे और समझी कुछ और
तब ऐसा कहतेहैं ॥

७५ कंगालीमें गीला आटा ॥ जब आपत्ति
और भी कुछ आपत्ति आजावे तब यह कहाव
जातीहै ॥

७६ कभी शक्कर घना, कभी मूठीयक चना
किसीको कभी तो अधिक प्राप्ति होजावे औ
कुछभी नहो तब ऐसा कहतेहैं ॥

७७ कानी में आंखमें तुस ॥ जब कोई आदमी झूठा बहाना करके अपना दोष छिपाना चाहता है तब ऐसा कहते हैं ॥

७८ कहनेसे धोबी गधेपर नहीं चढ़ता ॥ आदमी जो काम सदैव करता है परंतु जब कहने पर नहीं करता तब ऐसा कहते हैं ॥

७९ ककडी के चोरको तलवार मारना॥ अल्प अपराध पर जब भारी दंड दिया जाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

८० कूर योगी, मौन साध ॥ (जिसको अच्छी बात चीत करना नहीं आता उसकी बडाई चुप रहनेमें है) जब कोई निर्बुद्धि बक२करके अपनी प्रतिष्ठा खोता है तब ऐसा कहते हैं ॥

८१ कुछ मूसल नहीं बदलाना ॥ (कहानी) किसी समय एक मुसाफिरने लुटेरों के भयसे मूसलमें अशर्फियां भरके और ऊपरसे बंद करके यात्रा आरंभ

कोई, रातके समय किसी गांवमें एक बुढियाके घर
ठहरा, जब वह सो गया, तब उस बुढियाने यात्रीके
मूसलको अच्छा देखकर अपना मूसल उसकी जगह
बदलकर रख दिया । जब सबेरे मुसाफिर उठा तो
जान पडा कि मूसल बदला गया है ॥ इसने भेद
खुलनेके भयसे कुछभी गुल न किया वरन वही बुढिया
का मूसल लेकर चल दिया, थोडी दूरपर किसी गांवमें
जाकर उसने कुछ अच्छे मूसल बनवाये, और फिर
उसी गांवमें आकर रास्ते २ फिर कर कहने लगा कि
जिसे पुराने मूसलसे नया मूसल बदलाना हो, लावे ।
इसी प्रकार कुछ मूसल उसने बदले, इतनेमें उस बुढि
याको भी यह हाल ज्ञात हुआ उसने भी यात्रीवाला
मूसल जो कुछ पुरानासा था लाकर बदलाया, जब
मुसाफिर को असली मूसल (जिसके लिये यह यत्न
किया था) मिल गया तो और २ लोगोंसे जो मूसल
बदलाने को खडे थे कहा कि " अब हमैं मूसल

नहीं बदलाना) जब आदमी की गरज निकल जाती है तब पीछे कही जाती है ॥

८२ कलका योगी; पांव तक जटा ॥ जब कोई कम उमरका आदमी पुराने जमाने की गप्पें बढ २ कर मारता है तब ऐसा कहते हैं ॥

८३ कै कनभर, कै मनभर ॥ जब कोई पदार्थ इच्छासे बिलकुल थोडा या बहुत अधिक मिलता है तब ऐसा कहते हैं ॥

८४ काटे बाढ़ नाम तलवार का॥जब काम तो किसी और के द्वारा हो और प्रशंसा उससे संबंध रखने वाले किसी दूसरे की की जावे, तब ऐसा कहते हैं ॥

८५ काम प्यारा, चाम प्यारा नहीं ॥ जब कोई आदमी अपनी सुन्दरताके अभिमान में काम नहीं करता, तब ऐसा कहते हैं ॥ अथवा (देखो लोग चमडे को छूनेसे घिन करते हैं पर जब उसीसे जूता, चाबुक, बाक्स आदि अच्छे २ उपयोगी

सामान बनते तो प्यारे लगते हैं तब भी ऐसा कहते हैं।

८६ कोयले की दलाली में काला हाथ॥ जब बुरे काम के करने में बदनामी के सिवाय कुछ नहीं मिलता तब अथवा जब कोई काम करने में व्यर्थ परिश्रम जाता है और बदनामी मिलती है तो भी ऐसा कहते हैं॥

८७ कंगाल काजी कौरा॥ (रोटीका टुकडा) में॥ कैसी ही अच्छी बातें हो रही हों पर जब तुच्छ आदमी तुच्छही बातोंपर विशेष ध्यान देता है तब ऐसा कहते हैं॥

८८ कहने से करना भला॥ जब कोई काम कहने से तो आदमी नहीं करता पर फिर करता है तब अथवा बहुत बक न करके काम करना इ शिक्षाके लिये भी ऐसा कहते हैं॥

८९ काम करेगी बेटी, सुखसे खावेगी रोटी। परिश्रम करनेमें इच्छा पूर्ण होती और आनन्द मिलता है तब ऐसा कहतेहैं॥

श्री ज्ञानेजी ... भंडार पुस्तकालय

९० काजीजी दुबले क्यों शहरके अन्देशे ॥ जो आदमी अपना सोच न करके मुल्क भरकी चिन्ता करताहै उसके लिये यह कहावत कहतेहैं ॥

(किस्सा) किसी क्रोधी मुसल्मानने ईदके दिन हलाल करनेके लिये बकरा खरीद कर घरपर बांध रक्खा, दैवयोगसे ठीक ईदहीके दिन बकरा कहीं भाग गया मियां सा० मसजिद गयेथे बीबीने मियांके क्रोध से डरकर पहिले तो बकरेकी ढूंढ ढांढ़की परजब न मिला तो उनके आनेके पहिलेसे कुत्तेको हलाल करके उसका मांस पकाया, लडके ने यह सब काम देख लिये पर चुप चाप रहा जब बाप खाना खाने बैठा तब लड केने यह कहावत कही)

९१ कहूं तो मा मारीजाय, नहीं तो बाप कुत्ता खाय ॥ कोई काम करनेमें भी या न करनेमेंभी जब दोनों ओर दुबिधा होतो उस संकटकी दशामें ऐसा कहतेहैं ॥

3606

९८ खाली चना, बाजै घना ॥ जब कोई तुच्छ आदमी बड़ी २ बडप्पन की बातें करताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

९९ खाना और ऐंठना ॥ भोजन करलेना और कुछ काम न करके भी जब घरवालोंको कोई सताता है तब ऐसा कहतेहैं॥

१०० गाडर आनी ऊनको बैठी चरै कपास॥ जब कोई काम थोडे लाभके लिये किया जाता और उसमें बडी हानि होजातीहै तब ऐसा कहते हैं ॥

१०१ गाडीका नाम उखली ॥ कामके विरुद्ध नाम होनेपर कहा जाताहै ॥

१०२ गईथी नमाज बख्शाने, रोजेगले पडे ॥ जब कोई आदमी सुख उपार्जनके लिये जावे और दुःख पावे तब ऐसा कहते हैं ॥

१०३ गयेथे गाडीकी विन्तीको वाखर हार

आये ॥ जब थोडे लाभके लिये प्रयत्न करके बहुत हानि मिल तौहि तब ऐसा कहतेहैं ॥

१०४ गांव तेरा, नाम मेरा ॥ दूसरेका नाश होनेपर लाभ अपनेको हो तब ऐसा कहतेहैं ॥

१०५ गुडदेनेसे जो मरे, क्यों विष दीजै ताहि॥ जब अच्छी तरह काम निकले तो बुरीतरह से काम नहीं निकालना इस शिक्षाकेलिये ऐसा कहतेहैं ॥

१०६ गाल कटजाय, पर चावल न उगले। जब आदमी अपनी हठपर जाकर कष्ट चाहे उठाले पर छोडता नहीं तब ऐसा कहतेहैं ॥

१०७ गये कटक, रहे अटक ॥ जब कोई काम आदमी कर रहाहै या करनेपर उतारू है परन्तु ऐसी कोई बाधा आपडे जिससे वह काम बन्द करनापडे तब ऐसा कहते हैं अथवा जब किसीको कहीं भेजतेहैं और वह बहुत देर लगाताहै कहतेहैं ॥

११३ गँवारकी अकल सिरमें ॥ जब गंवा
आदमी सीधी तरहसे तो नहीं वरन टेढी तरहसे रास्ते
आता तब ऐसा कहतेहैं ॥

११४ गरजताहै सो बरसता नहीं ॥ जब कोई
आदमी बातें तो बहुत मारता पर कर कुछभी नहीं
सका तब ऐसा कहतेहैं ॥

११५ गप्पीका पूत गपाकडा ॥ झूठ बोलने
वालेका लडका यदि उससे भी अधिक गप्पी होवे
ऐसा कहतेहैं ॥

११६ गुरूगुरकावे, चेलाटरकावे ॥ जब वि
आदमीकी बुरीबातमें उसीका संबंधी सहायता करत
तब ऐसा कहतेहैं ॥

११७ गरजवन्तको अकल नहीं ॥ जब क
आदमी अपने प्रयोजनके लिये किसीका भला बु
नहीं देखता तब ऐसा कहतेहैं ॥

११८ गधोंनेखाया खेत, पाप न पुन्य ॥

अज्ञानी और कृतघ्न पुरुषोंमें व्यर्थ द्रव्य व्यय किया जाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

११९ गंजीयार किसके, दम लगावे तिसके॥ जो जिसका साथी और समान गुणवाला होताहै उसीसे प्रीति करता तब ऐसा कहते हैं ॥

१२० गाडीकासुखगाडीभर, गाडीका दुख गाडीभर ॥ जब जिसकाममें आदमीको जितना सुख होताहै उसके बदले उतनाही दुख उठाना पडे तब ऐसा कहतेहैं ॥

१२१ गुरवेल (गिलोय) अरुनीमपरचढ़ी ॥ जब कोई आदमी स्वतः दुर्गुणीहो इतने पर दुर्गुणीही की संगति करै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१२२ गोकुलसे मथुरा न्यारी॥ जब प्रत्यक्षमें तो कोई आदमी मिलाहो पर अभ्यन्तर अलग हो तब ऐसा कहतेहैं ॥

१२३ घरका परसैया, अंधेरीरात ॥ जब तर-

फदारी करके निजके आदमीको दूसरोंकी अ
अधिक लाभ पहुंचाया जाताहै तब ऐसा कहते
१२४ घरसे खोवें, तो आंखें होवें ॥
आदमी पराया द्रव्य अन्धाधुन्ध और बेपीर
व्यय करताहै तब ऐसा कहाजाताहै ॥

१२५ घर आये पूजेनहीं, वांबा पूजन ज
जब काम सहलतासे होताहो तब तो कोई उ
नहीं पर पीछेसे उसी कामको कठिन परिश्रम
सिद्ध करनाचाहे तब ऐसा कहतेहैं ॥

१२६ घरतंग, वहू जबरजंग ॥ रहनेको
छोटी जगहहो और रहने वाले अधिकहों तब
निर्धन घरमें शाहखर्च औरत हो तबभी ऐसा कह

१२७ घर हानि, अरु लोगोंको हँसी ॥
हानि उठाकर जब दूसरोंकी हँसी होती है त
कहते हैं ॥

१२८ घरके घरदिन समाप और लठं

पाहुने ॥ जब किसीके घरमेंही इतने मनुष्य हों कि जिनका निर्वाह होना दुश्वार है तिसपर भी दूसरे लोग आजावें तब ऐसा कहते हैं ॥

१२९ घरमें धन, सिरपर ऋण ॥ जब कंजूस आदमी बहुत धन होनेपर भी यहां वहांका करजा रखताहै तब ऐसा कहते हैं ॥

१३० घड़ी भरकी बेशरमी, सब दिनका आराम ॥ जो काम अपन करनेमें असमर्थ हैं उसके लिये अकेला " ना " कहकर चुपरहने से यद्यपि थोड़ी देरके लिये उस मनुष्यको बुरा लगता है परंतु तकलीफसे बचाव होता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१३१ घरखोवें अरु आस पास, तिनको नाम धर्म दास, ॥ जो लोग अपना कामही नहीं बरन दूसरोंका कामभी बिगाड देते या बुरा करते और अपने तई सज्जन बने फिरते हैं उनके लिये यह कहावत चरितार्थ होती है ॥

१३२ घरके पीरोंको तेलकी मिठाई ॥ जब बाहरके आदमीसे तो अच्छा बर्ताव किया जाता और घरके आदमियोंसे उनकी अपेक्षा बुरा तब ऐसा कहते हैं ॥

१३३ घरमें नहीं खानेको, अम्मा चली पीसनेको ॥ जब घरमें किसी चीजकी जो हमेशा रहना अवश्य है आवश्यका हो और उसी समय लेनेको दौड़े तब ऐसा कहते हैं ॥

१३४ चार दिनकी चांदनी, फिर अँधेरी रात ॥ जब कुछ दिन सुख होकर फिर दुख आजाता है तब अथवा जब कोई आदमी अच्छा वसीला पाकर घमंड करने लगता है पर कुछ दिनमें दुःखी होजाता है तब लोग ऐसा कहने लगते हैं ॥

१३५ चाकरसे कूकर भला, जो सोवे अपनी नींद ॥ जब नौकर आठों पहर काम करते २ तंग होजाता है तब ऐसा कहता है ॥

१२६ चिकने मुंहको सभी चूमते हैं ॥ बड़े आदमीकी हांमें हां जब सबलोग मिलाते तथा खुशामद करते हैं तब ऐसा कहा जाता है ॥

१२७ चोरकी डाढ़ीमें तिनका ॥ जिस मनुष्यमें कोई अवगुण हो यदि उसके सन्मुख उस अवगुणकी समालोचना कोई अपरिचित भी करे तो वह अपने ऊपर समझकर लड़नेको तय्यार होताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१२८ चोर कामाल, चंडाल खाय॥ (कहानी) चार चोर किसी जगहसे धन चुराकर लाये किसी गांवके बाहिर बैठकर उनने कहा कि भाई भूख लगी है कुछ मिठाई खावें ऐसा कहकर दो तो मिठाई लेने-गये ॥ जो दो चोर शेष रहे उनने सोचा कि अपनेको जिन्दगीभर चोरी करते हुआ पर कंगालही रहे इससे आजका धन बहुतहै सो उन दोनोंको मिठाई

लातेही मारडालना चाहिये जिससे हम तुम दो
आधा २ धन पावैं यहां तो यह विचार होरहाथा॥
मिठाई लानेवालोंने इन्हीकी भांति सोचकर मिठा
कुछ लड्डू विष मिश्रित करदिये, जब वेदोनों मिठा
लेकर पहुंचे कि तलवारसे मारेगये फिर उन दोनों
शान्तिचित्त होकर वह सब मिठाई खाई और वि
प्रयोगके कारण मृत्युको प्राप्त हुए ॥ जब किसीने
चार आदमियोंको मरे देखकर गांवमें खबर दी
भंगियोंको जलानेकी आज्ञादीगई तब भंगियोंने उन
सब माल असबाव आनन्द पूर्वक लिया जब को
आदमी बेईमानी से द्रव्य उपार्जन करके उससे सु
प्राप्त नहीं करसक्ता वरन लुचे लफंगे खातेहैं तब ऐसा
कहा जाता है ॥

१२९ चढे सो पडे ॥ आदमी जो काम क
करताहै उसमें कभी न कभी हानि अथवा कष्ट अव
होताहै तब अथवा जो आदमी बहुत पढताहै पर का

त. कभी वह न्यून दशाको अवश्य प्राप्त होताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१४० चाचा चोर भतीजा काजी ॥ जब कोई कामतो बुरा करै पर आपस वाला दूसरोंसे उस बुरे कामकी निन्दाके बदले प्रशंसा करै तो ऐसा कहते हैं॥

१४१ चोरहि चांदनी रात न भावे ॥ जो बात सबको प्रिय हो यदि उसीसे किसीका नुकसान होता हो और वह उसकी निन्दा करै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१४२ चोर २ मौसेरे भाई ॥ एक झूठेकी बात को जब दूसरा पुष्ट करताहै तब ऐसा कहा जाता है ॥

१४३ चौबे गये छब्बे होनेको दुबे होआये ॥ (कोई दम्पति बच्चेके लिये उपाय करनेको कहीं गयेथे कि वहां जाने पर स्त्री ही मरगई तब अकेले रहगये) जब कोई आदमी लाभके लिये प्रयत्नशील हो और उल्टी हानि होजावे, तब ऐसा कहतेहैं ॥

१४४ चुका वायदा, कि दिखाया कायदा ॥

काम निकलनेके पीछे जब कोई आदमी बेमुरव्वतके साथ वर्ताव करता हे तब ऐसा कहते हैं ॥

१४५ चोरकी स्त्री चुप चाप रोती ॥ जब कोई आदमी किसी अपराधमें दंडपाकर चुपचाप दुःखी होता और अपनी मान हानिके भयसे किसीपर प्रगट नहीं करता तब ऐसा कहते हैं ॥

१४६ चोर चोरीसे गया, तो क्या हेराफेरीसे भी ॥ (कोई खंगार साधू होगया पर उसका जाति स्वभाव नहींगया भला साधुओंके पास चोरी करनेको क्या था इसलिये इसको चैन न पडे तब उसने तूंबे गटसट करदेने हीसे अपनी शान्ति करना ठहराया । जब साधु सबेरे उठते अपनी तूंबी किसी औरके पास तथा और की अपने पास पाते तब उन्होंने एक दिन मालूम करके उससे कहा तू ऐसा क्यों करता है तब उसने विनय की कि मेरा जाति स्वभाव यहीहै) जब आदमी किसी कुव्यसनका त्याग करदे पर उसकी टेव

जावे और जब कभी कुछ चेष्टाभी उसके अनुकूल करे तब ऐसा कहतेहैं ॥

१४७ चिकने घडेका पानी ॥ जब किसीको बार २ शिक्षा करनेपर कुछ असर नहीं होता तब ऐसा कहते हैं ॥

१४८ चिडियेके शिकारमें शेरका सामान ॥ यद्यपि काम छोटाही करना हो तथापि जब सामान बडे काम करने का तय्यार कियाजावे तब ऐसा कहते हैं अथवा छोटा काम हो तब भी होशयारी बहुत रखने की शिक्षाके लिये भी ऐसा कहतेहैं ॥

१४९ चलनीमें गाय दुहें, कपाले दोष देयँ ॥ जो आदमी जान बूझकर तो बुरा काम करता और कहताहै कि हमारी तकदीर बुरीहै उसके लिये यह कहावत चारितार्थ होतीहै ॥

छोटा मुंह बडी बात ॥ जब किसी छोटे आदमीको बहुत बड़ा भेद प्रगट करनेका अवसर आता तब ऐसा कहता है ॥

१६१ छडी लगे चट, विद्या आवे झट ॥ जब विद्यार्थी विना डरके पढता नहीं तब उसका चित पढ़नेमें लगे इसलिये डर देनेके लिये ऐसा कहते हैं अथवा जब विद्यार्थी दंड देनेसे अच्छे पढ़ते हैं तब औरोंके उत्तेजनार्थ भी ऐसा कहते हैं ॥

१६२ जाकी लाठी, ताकी भैंस ॥ जिसका आतंक होता है उसके आधीनी लोग अवश्य उसके वशमें रहते हैं तब अथवा जब कोई मनुष्य जबरदस्ती से काम कर लेता है चाहे वह अयोग्यही हो तब ऐसा कहते हैं ॥

१६३ जाका कोड़ा, ताका घोड़ा ॥ इसका अर्थभी उपरोक्तानुसार है ॥

१६४ जबरदस्त का ठेंगा सिरपर ॥ जब कोई बलवान आदमी किसीसे बलात्कार अपनी आज्ञा ... है तब ऐसा कहते हैं ॥

, जोड़ न जाता, खुदासे नाता ॥ ...

आदमी अकेला है अर्थात् भाई बंधु सम्बन्धी जिसके कोई नहीं उसके लिये लोग ऐसा कहते हैं ॥

१५६ जैसी करनी, तैसी भरनी ॥ सुचरित और धर्म सहित चलनेके लिये शिक्षा है ॥

१५७ जाके घरमें नौ से गाय, सो क्या छांछ पराई खाय ॥ जिसके पास सर्वप्रकार की सामग्री उपस्थित है उसके लिये जब कोई कभी ऐसा कहने लगता है कि वह अमुक मनुष्य से अमुक पदार्थ लाया तब अथवा किसी सम्पत्तिवान् का बडप्पन बताने को भी ऐसा कहते हैं ॥

१५८ जैसा देश, तैसा भेष ॥ जब कोई मनुष्य क देशसे जाकर दूसरे देशमें जाकर रहने लगता है र व्यवहार वहांके अनुसार नहीं करता तो बहुधा से नाम धराई तथा अडचन प्राप्त होती है उनके शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं ॥

१५९ जैसा तेरा आव भाव, तैसा मेरा आशि

स्वाद ॥ जब किसी आदमीके बुरे बर्तावके ब
बुराही बर्तावा किया जाता है और वह जब उसह
देने लगता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१६० जबान सीरी, मुल्क गीरी ॥ जो लो
अच्छा बर्ताव अथवा बोल चाल से परदेशमें सु
पाते हैं उनके प्रशंसार्थ अथवा सब लोगोंके शिक्षा
ऐसा कहा जाता है ॥

१६१ जबान टेढ़ी, मुल्क बांका ॥ देशमें तो
ही है पर परदेशमें जाकर जो अच्छी चाल नहीं चल
और दुःख उठाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१६२ जाकी घरमें माई, ताकी राम बनाई
जब किसी आदमी का कहीं वसीला होता है और
उसके द्वारा लाभ प्राप्त कर लेता है तब ऐसा कहते

१६३ जब नटनी बांसपर चढ़ी, तब ला
कादेकी ॥ जो आदमी काम तो अतिही निन्द
पर मुंह फेरकहने शरमावे तब ऐसा कहते हैं ॥

१६४ जबर मारे रोने नदे ॥ जब जबरदस्त आदमी बलात्कार दूसरेसे काम करा लेता और उसको कहीं रोनेगाने भी नहीं देता अर्थात् झिडकता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१६५ जेवरी जल गई, पर ऐंठ न गई ॥ जब कोई वज्र हृदय पुरुष बहुतप्रकार के दुःख देनेपर भी अपनी कुटिलता नहीं छोडता तब ऐसा कहते हैं ॥

१६६ जिसकी आंखनहीं, उसकी साखनहीं ॥ जिसने जो बात आंखसे नहीं देखी ऐसा ज्ञात होजाता है तो वह कितने ही सौगंध क्यों नखावे पर नहीं मानी जाती तब ऐसा कहतेहैं ॥

१६७ जन्मके दुखिया, सबसुख नाम ॥ जब दशा अथवा कर्मकी अपेक्षा विरुद्ध नाम होता तब तब ऐसा कहतेहैं ॥

१६८ जाके पांव न फटी बिवाँई, सो क्या जाने पीर पराई ॥ जब कोई आदमी दूसरेके दुःखसे

साथ रहती है इसको प्रगट करनेके लिये भी कहतेहैं॥

१७२ जानवरोंमें कौआ, आदमियोंमें नौआ॥ किसी व्यक्तिकी चालाकी प्रगट करनेको यह कहावत उदाहरण रूपहै॥

१७३ जिसको कर, उसको डर॥ जो आदमी सदैव भलाबुरा काम करताहै उसको वह डरताहै अथवा डरना चाहिये इसके प्रगट करनेको यह कहावत कही जातीहै॥

१७४ जातका बैरी जात, काठका बैरीकाठ॥ (जब तक कुल्हाड़ीमें काठका बेंट नहीं लगाया जाता तब तक उसकी जाति याने लकडी नहीं कटती) जब किसी जातिका मनुष्य कुछ अपराध विरादरी संबंधमें करताहै तब जातिके लोग बैरीकी नाईं उसे दंडित करतेहैं तब ऐसा कहतेहैं॥

१७५ जब तक जीना, तब तक सीना॥ जब तक आदमी जीताहै उसे एक न एक सांसारिक काम लगाही रहता है तब लोग ऐसा कहतेहैं॥

१७६ जगन्नाथकाभात, जगतपसारे हाथ॥ जब किसी कार्यमें जो लोकविरुद्ध भी हो उसमें किसी प्रकार का परहेज न करके सब लोग धार्मिक कार्य समझकर करने लगतेहैं तब ऐसा कहाजाताहै ॥

१७७ जो करै लिखनेकी गलती, उसकी थैली होगी हलकी ॥ जो लिखनेमें असावधानी करके हानि उठातेहैं उनके शिक्षार्थ यह कहावत कही जातीहै

१७८ जागे सो पावै
सोवै सो खोवै ॥ }आलसी मनुष्य सदैव व्यर्थ समय खोते और कुछभी लाभ नहीं उठाते परंतु जो निरालसीहैं वे उद्योग करके जब द्रव्योपार्जन करतेहैं तब दोनों प्रकारके मनुष्योंकी समालोचनार्थ यह कहावत कहतेहैं ॥

१७९ जिसकी तड़में लाड़, उसकी तडमें हम खुशामदी आदमी जिस तरफ दो पैसेकी आमदनी देखते उसी तरफ चापलूसी और लल्लोचप्पो करते पहुंच जाते, तब ऐसा कहा जाता है ॥

१८० जा विरियाना वा विरिया, गधे नोन देइदे ॥ जब समय कुसमयका विचार न करके कोई आदमी अपना काम (जो उसके लिये करना असंभव है) करनेको कहता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१८१ टेढी अंगुली, घीव न निकले ॥ जब सीधी तरहसे कोई काम नहीं निकलता वरन टेढेपनसे निकलता है तब ऐसा कहा जाता है ॥

१८२ टकामें टका, ढकामें ढका ॥ जब पैसे वालेके पास पैसा आता और दुःखीको दुःख अथवा नुकसान पहुंचता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१८३ टोपीकी इज्जत, पगडी गायब ॥ आज कल इस देशकी असली पोशाक पगडी बांधनेके बदले लोग दूसरे देशकी पोशाक टोपी लगाना सीख गये हैं इस लिये अथवा जब टोपी खोजाती या उसके पहिनेका व्यय करनेसे असमर्थ होते तब टोपीकीही इज्जत करना पड़ती है तब ऐसा कहते हैं ॥

१८४ टांकीका घाव सहे तब ईश्वर ॥ (तकलीफ उठानेके पीछे लाभ होता है) जो लोग तकलीफके डरसे अपना लाभ अथवा प्रतिष्ठा छोड़ते हैं तब उनके शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं ॥

१८५ टुकड़े २ काम चलै, तो मिहनतकौन करै ॥ (आज कल बहुधा हट्टे कट्टे मनुष्य अपना धंधा समझके भीख मांगते हैं) जब ऐसे कुपात्र दरवाजेपर आते हैं तब विवेकी दाता लोग उनको इस कहावत द्वारा लज्जित करके कहते हैं कि मजदूरी न करो॥

१८६ टूटीबांह गले पड़ी ॥ जब कोई अपना (पुरुषहो या अंग) जिसके द्वारा लाभकी आशा करतेथे निरर्थक होजावे और उससे दुःख उठाना पड़े तब ऐसा कहते हैं ॥

१८७ टांगकी जगह लँगड़ेकी लाठी ॥ जब कभी उपयोगी पदार्थ बिगड़ जाता है और उसके बदले जिस प्रकार होसके दूसरेके द्वारा निर्वाह किया तब ऐसा कहते हैं ॥

१८८ टर २ करना, सचकाझूठ बनाना ॥ दूसरे की सचबात जब किसीको झूठ बनाना होती है तब वह स्पष्ट उत्तर न देते हुए गटसट बातें करने लगता तब ऐसा कहते हैं ॥

१८९ टोड़र मच्छ कापेट, लोगोंकी दिल्लगी ॥ एक आदमीके साधारण किसी विषयमें जब दूसरोंकी हँसीका अवसर आता तब ऐसा कहते हैं ॥

१९० टाटपर पंचके बराबर, अमीर क्या गरीब ॥ जब किसी जगह जन समूह इकट्ठा होकर एकही आसनपर बैठता तब वहां बड़े छोटे का विचार नहीं रहता तब अथवा जाति संबंधी कार्योंमें जब ऐसा होता है तब भी ऐसा कहते हैं ॥

१९१ टूटे टांग कि होय निबेड़ा ॥ (कोई बीमार जिसकी टांगमें बहुत दर्दथा अस्पतालमें आया, वहां उसके घावपर बहुत तेज २ दवाइयां लगाई गईं जिससे उसे और भी कष्ट हुआ किसी दिन डाक्टर

साहिबने आकर उसका हाल पूंछा तब उसने ऐसा कहा) किसी कष्टसे पार पानेके समय ऐसा कहते हैं॥

१९२ ठाट (छप्पर) काटकर लक्ष्मी ॥ (किसी मनुष्यने यह प्रण किया कि हम उद्योग कुछभी न करेंगे जब ईश्वरको देना होगा तो हमें ठाटकाटकर देगा, ऐसा प्रणठान मकानको बंदकर चुपचाप लेटरहा, दो तीन दिन पीछे पाखानेकी हाजत हुई गये तो दस्त न उतरा एक झाड़को पकड़कर दस्त निकलनेका उपाय किया तो वह झाड जड़से उखड़ पडा जिसके नीचे दो घड़े सुवर्ण मुद्रासे भरे पड़े थे तब भी उसने उन्हें नहीं उठाया और प्रणपर रहकर जा लेटा, रात्रिके समय चोर आये दीवार खोदने लगे तब उसने कहा कि घरमें कुछ नहीं है क्यों व्यर्थ परिश्रम करतेहो यदि धन चाहो तो पाखानेमें अमुक स्थानमें उठालाओ. जब वे वहां गये तो देखते क्या हैं कि उन घड़ोंमें सांप बिच्छू होगये

क्योंकि वह धन उनके भाग्य का न था तब उन्होंने क्रोधित होकर उन सांप विच्छूभरे घडोंको छप्पर काटकर उसपर डाले, उसके भाग्यका वह धन था इस लिये गिरतेही स्वर्ण मुद्रा होगया तब उसने प्रणके अनुसार द्रव्य पाकर अपने घरमें रक्खा) जब कोई आदमी उद्यम तो कुछभी न करे पर लक्ष्मी उसके पास उपतके आवे तब ऐसा कहतेहैं ॥

१९३ डाकन बेटा बेटीदे, किले ॥ बुरे या हानि पहुंचानेका जिसका स्वभावहै ऐसे ओरसे कोई लाभकी आशा करे तब ऐसा कहतेहैं ॥

१९४ डेढ़ पहोली रमतिला, मिरजापुरकी हाट ॥ जब आदमी थोडा पदार्थ पास होनेपर उसके विषय बडे २ विचार अथवा शेखी कहताहै तब ऐसा कहते हैं ॥

१९५ डेढ़ पेड़ बकायन, मियाँ बागतले ॥ उपरोक्त अनुसार ॥

१९६ डारका चूका बन्दर, बातका चूका आदमी ॥ जब कोई आदमी ठीक अवसर परही चूक करके हानि उठाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

१९७ ढालमें शेर ॥ जब कोई असंभवित बात होजातीहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१९८ ढाई चांवलकी खिचडी ॥ जब प्रत्येक मनुष्य अपनी २ इच्छानुसार पृथक् २ कार्य करतेहैं तब ऐसा कहतेहैं ॥

१९९ तलवार मारे एकवार, अहसान मारे बार २ ॥ जब कोई आदमी किसीपर कुछ उपकार करके पीछे अपना अहसान बार २ बताके उसे चराता या दबाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२०० तुम्हारी डाढी जलने दो, हमारा दिया बलने दो ॥ जब दूसरेका नुकसान होते हुए भी अपना प्रयोजन गांठना चाहताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२०१ तीनमें न तेरहमें, ढोल बजावें डेरमें ॥

जो आदमी किसीसे कुछ प्रयोजन न रखके अपनेही रागमें मस्त रहताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२०२ तीनोंपन एकसे नहीं जाते ॥ (आदमीके सब दिन एकसे नहीं निकलते) जो लोग सुखमें फूले नहीं समाते और दुःखमें हाय २ करते उनको शिक्षार्थ यह कहावतहै ॥

२०३ तीरथ गये तीनोंजने चित चंचल, मनमोर। रत्ती-भर पाप घटो नहीं सौमन लागा और	जो मनुष्य दुष्क-र्मीहैं यदि वे तीर्थ या धर्मव्रत आदि भी करें पर उनकी

कपट कतरनी नहीं छूटती तब ऐसा कहतेहैं ॥

२०४ तूं मेरी जिकरमें, मैं तेरी फिकरमें ॥ जब कोई आदमी किसीकी बदनामी ही करता है तो दूसरा उसको भारी हानि पहुचानेका उद्योग करता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

२०५ तीर नहीं तो तुक्का ॥ जिस कामको पूरा

करना चाहते हैं पर वह थोडा ही हो सका है
ऐसा कहते हैं ॥

२०६ तांबेकी मेख, तमाशा देख ॥ जब
वाला आदमी सब कुछ संभव असंभव कर सक
तब लोग ऐसा कहते हैं ॥

२०७ तिनका की ओट पहाड़ ॥ थोडे
या छोटेके बलसे जब बडा काम सिद्ध होता तब
कहते हैं ॥

२०८ तेलीका तेल जले, मसालची का
फूटे ॥ जिसका खर्च होता हो वह तो सोच
पर देखनेवाले या जिनके हाथ खर्च कराया जात
वे फिक्र करें तब ऐसा कहते हैं ॥

२०९ तलवारके घावसे वचन का घाव बढ़
(तलवार का घाव पूर जाता पर कुवचन याद
है) कोई भी आदमी क्यों नहो उसे कुवचन मह
असह्य होता है यहां तक कि बातके पीछे जान
तय्यार हो जाते तब ऐसा कहते हैं ॥

२१० तीन कौर भीतर, तब देवता पीतर ॥
जिस समय अति भूखा होता है तो उसे सिवाय भोजन करनेके दूसरा काम नहीं सूझता तब ऐसा कहा जाता है ॥

२११ तलवार किसकी, मारैगा तिसकी ॥
जिसके हाथ जो पदार्थ होता वह उसीके काम आता है पास न हो तो उसके किस कामकी, तब अथवा जो तलवार चलाना नहीं जानता हो उसीका तलवार सार्थक है जब लोग तलवार घरपर रख आते या बांधभी लेते पर चलाना नहीं जानते अथवा चलानेका साहस नहीं होता तब ऐसा कहते हैं ॥

२१२ तलवार ते देदी, परम्यान मेरे मारें देंगे ॥ जब कोई आदमी असली प्रयोजनीय पदार्थ तो दे देवे और कुछभी खेद न करे परंतु तुच्छ पदार्थके देनेमें असमंजस करे अथवा दुःखी हो तब ऐसा कहते हैं ॥

जो मनुष्य अपनी सुन्दरताके घमंडमें कुछ काम नहीं करता तो उसके धिक्कारनेको ऐसा कहते हैं ॥

२१७ दिलचोर खाना, सिरफोड लडना ॥ जब कोई मनुष्य आपसकी लडाई में क्रोधित होकर लंघन ठानताहै तो उसका क्रोध शान्ति करनेको ऐसा कहाजाताहै ॥

२१८ दूसरेकी आश, सदा निराश ॥ जो आदमी अपना बल कुछभी न होते हुए दूसरेके भरोसे कोई कार्य जो सामर्थ्यसे बाहिरहो करनेको ठानताहै पर पूरा नहीं पडता तब ऐसा कहतेहैं ॥

२१९ दिलजाने सो दिलदार ॥ (जो आदमी सदा दूसरेका दिल देखकर काम करता है वही मित्र है) जब कोई आदमी इच्छा विरुद्ध कामकरते हुए अपने को मित्र कहताहै तब ऐसा कहते हैं ॥

२२० दमडीकी हंडी गई, कुत्तेकी जात पहचानी ॥ (थोडा ही बातमें जाति कहींसे भली जुभई

जो कला खुल आई) जब थोडे ही नुकसानसे किसी-
का स्वभाव ज्ञात होजाताहै तब ऐसा कहा जाताहै ॥८

२२१ दुनियाँ दोरंगीहै ॥ जब एकही काममें
कोई सुख और कोई दुःखमानता अथवाजब किसी
काममें लाभ होनेपर लोग प्रशंसा करते परन्तु उसीमें
हानि होनेपर निन्दा करते तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२२२ देशी कुतिया विलायती बोल ॥ जो
लोग अपने देशका चाल चलन छोड दूसरे देशक
आचार व्यवहार विना योग्यताके अंगीकार करते
तब उनके लिये यह कहावत चरितार्थ होतीहै ॥

२२३ दूधका जला छांछ फूक २ कर पीता
किसी काममें जब अधिक हानि अथवा दुःख होता
तो दूसरीवार छोटेसे काममें भी अधिक सावधा
रक्खी जातीहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२२४ दिनभर चले, अढाई कोस ॥ जब क

काम रोज २ कर धीरे २ किया जाता हो तब ऐसा कहतेहैं ॥

२२५ दिन दूना, रात चौगुना॥ जब किसीकी दिन प्रति मे प्रमाण वृद्धि होतीहै तब ऐसा कहा जाताहै

२२६ दुविधामें दोनों गये, माया मिलीन राम जो आदमी दो जगह या दो कामोंमें चित्त रखता और एकभी पूरा नहीं पडता तब ऐसा कहते अथवा दो जगहसे मिलनेकी आशा रखते हुए को एकही स्थलसे प्राप्ति न हो तबभी ऐसा कहतेहैं ॥

२२७ दो घरका पाहुना भूखामरे ॥ उपरोक्तानुसार ॥

२२८ दूबरी अरुदो अषाढ ॥ एक दुःख होते हुए दैवयोगसे दूसरा दुःख जब उपस्थित होता तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२२९ दुकानपर बैठने नदे, अच्छा तौलना ॥ आदमी पास तो बैठने न दे और कोई उससे परिचय

करके लाभकी आशा करे तब ऐसा कहतेहैं।

२३० देश चोरी, परदेश भीख ॥ (चोरी विना जाने समझे सफलता नहीं होती इसी प्रकार परिचयके स्थानमें भीख मांगते लज्जा आतीहै) जब कोई आदमी बहुत दरिद्री और दुःखी होजाता है तब ऐसा कहता है ॥

२३१ दगाकिसीका सगा नहीं ॥ धोखेबाज लोग जब अपने कर्तव्य द्वारा दुःख पाते तब ऐसा कहा जाता है ॥ अथवा दगाबाज लोग किसीको भी दगा करने से नहीं छोड़ते तबभी ऐसा कहतेहैं ॥

२३२ दमड़ीकी ठोकर टकाजुढाई ॥ थोड़े कामके जब अधिक दाम मांगजाते तब ऐसा कहतेहैं।

२३३ दमड़ीकी मुर्गी नौटका चौथाई ॥ जब किसी पदार्थका अगंभवित अधिक मोल कहा जाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

२३४ दिया तले अंधेरा ॥ जहां विशेष विचार

ा स्थल हो यदि वहां अंधेर चले तब ऐसा कहते हैं॥

२३५ दुष्ट देवकी, भृष्ट पूजा ॥ जो आदमी दुष्ट ो जब वह सज्जनतासे प्रसन्न न होकर दुर्जनतासे सन्न या ठीक हो तब ऐसा कहा जाताहे ॥

२३६ दे दिया, संगलिया ॥ कंजूसोंको दान के शिक्षार्थ अथवा दानियोंकी प्रशंसाके लिये ऐसा हतेहैं ॥

२३७ दमडीके तीन २ ॥ जो मनुष्य अत्यंत लकी इज्जतका होताहै तो उसके बारेमें यह कहावत ही जातीहै ॥

२३८ दया धर्म नहि तनमें मुखडा क्या देखे दर्पणमें ॥ जो लोग दया धर्मको छोड केवल अहंकार और भोग विलासमें मस्त रहते उनके शिक्षार्थ अथवा जो बुरा करके भला फल चाहते उनके उपहार्थ यह कहावत कही जातीहै ॥

२३९ धोबीका कुत्ता, घर का न घाटका ॥

जो आदमी दो स्थानका रहनेवाला होकर किसी स्थान
भी आरामनहीं पाता तबऐसा कहतेहैं ॥

२४० धीरासो, गंभीरा ॥ जब कोई आद
उतावलीसे काम बिगाडलेता तो उसके शिक्षा
अथवा जो धीरजसे काम सुधार लेताहै उसके प्रशंस
ऐसा कहतेहैं ॥

२४१ धाके चलो, न गिर पडो ॥ जो लो
अधिक उतावली करके दुःख और हानि उठाते उन
शिक्षार्थ यह कहावत है ॥

२४२ नेकीका बदला बदी ॥ बहुधा लोग
भलाईके बदले बुराई करते हैं तब ऐसा कहा जाता

२४३ नये २ हाकिम नई २ बातें ॥ जब
हाकिमकी जगह दूसरा आता है तो बहुधा
नये कायदे जारी करता है जो पहिलेके विरुद्ध
नये साधारणको दुःखदायी होते हैं ॥ तब
कहा जाता है ॥

२४४ नाक कटी परहठ न हटी ॥ जब हठीले आदमी चाहे कितनाही दुःख और हानि सहलेते पर अपनीटेव नहीं छोड़ते तब ऐसा कहा जाता है ॥

२४५ नाच न आवे अंगन टेढा ॥ किसी कामके करनेकी युक्ति तथा साधन ज्ञात न होते हुए सामानको दोष दियाजाता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

२४६ नकटेकी नाक कटी, सवागज और बढी ॥ जो आदमी निर्लज्जहैं वे अपमान होनेपर भी कुछ ध्यान न करके अपनी चालको दिनप्रति वृद्धि देते जातेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२४७ नाँगी भली कि मूसल आडे ॥ बिलकुल न होनेकी अपेक्षा जब थोडाही होता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

२४८ नाम बडे दर्शन थोडे ॥ जिसकी परोक्षमें अधिक प्रशंसा सुनी जावे पर प्रत्यक्षमें कुछ भी न हो तब ऐसा कहाजाताहै ॥

२४९नाम पहाडखां, बोले तवचीं॥जिसके नामसे बडप्पन प्रगट हो परकाम करनेमें नपुंसक हो तब ऐसे कहतेहैं ॥

२५० नेकी कर दरियामें डाल॥जब किसीका कुछ उपकार करना तो फिर कभी मुंहपर न लाना बहुत लोग अपने किये उपकारको बार २ कहतेहैं उनको शिक्षार्थ यह कहावतहै ॥

२५१ नाक नौंगिगले हमेल ॥ जिस वस्तुकी आवश्यका हो उसकी इच्छा न करतेहुए अनावश्यक पदार्थ चाहनेपर ऐसा कहा जाताहै ॥

२५२ नाईकी बरातमें सभी ठाकुर ॥ (नाई सबकी बरातमें कमीनी का काम करतेहैं पर उनकी बारातमें कमीनीका काम कौन करे) जहां सब आदमी बराबरके हों वहां निकृष्ट अथवा परिश्रमका कार्य आपडे और कोईभी न करे तब ऐसा कहतेहैं ।

२५३ न नव नगद न तेरह उधार ॥ जब कोई

सफाईसे करनाहै और कोई उसमें धांदा करताहो तो उसे समझानेको ऐसा कहतेहैं ॥

२५४ नामी वनियाँ कमाखाय, नामीचोर मारा जाय ॥ जो अच्छे काममें बढ़ चढ़कर सफलता पाता है वह धन और बडप्पन पाता पर जो बुरे काम में बढचढ़ कर होता वह जब भारी हानि और दुःख पाता है तब यह कहावत कही जाती है ॥

२५५ नया नव गंडा, पुराना दस गंडा ॥ जहां नये आदमीकी अपेक्षा पुराना पुरानेकी कम कदर होजाती है यद्यपि दोनों एकसेहों तब ऐसा कहते हैं ॥

२५६ नौकी लकड़ी, नब्बे खर्चे ॥ जब अल्पमूल्यके पदार्थके लिये आदमी अपनी अज्ञानतासे बहुत सा धन व्यय कर देताहै तब ऐसा कहते हैं ॥

२५७ नसीब वरका खेत भूत जोतताहै ॥ जब किसी भाग्यशाली का काम सबलोग बिना कहे स्वयमेव करनेको तत्पर होजाते या कोई काम पूर्व पुन्योदयसे स्वयमेव होजाता तब ऐसा कहते हैं ॥

जिसने जो दुःख कभी नहीं देखा और इकदम किसी दूसरेकाभी दुःख देखे तो अपने पर ऐसा दुःख पडेगा ऐसा विचार करके दुःखी होते तब ऐसा कहतेहैं ॥

२६३ परमुई सासू॥आसों आये आंसू ॥ जब दुःखपडे तब तो शोक न किया जाय पर बहुत दिनों पीछे केवल दूसरोंके बतानेको शोकप्रगट किया जाय तब ऐसा कहते हैं ॥

२६४ पूतके लक्षण पालने ॥ जब किसीके कुलक्षण या सुलक्षण अथवा अच्छा या बुरा नतीजा जब आरंभहीसे ज्ञात होताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२६५ पड़िया मोल, भैंसरुगौना ॥ जब थोडे मूल्यका पदार्थ लेकर अधिक मोलकी वस्तु रुगौना (मुफ्तमें) मांगे में चाहे तब ऐसा कहतेहैं ॥

२६६ पढे न लिखे, नाम विद्याधर ॥ योग्यता अथवा करतूतिके विरुद्ध नाम होनेपर ऐसा कहा जाताहै

२६७ पांडेहीं पछतायँगे, सूखे चने खायँगे॥

भीभी एकत्र होकर करडालतेहैं तब ऐसा कहतेहैं ॥

२७२ पढ़ें पारसी बेंचें तेल ॥ जब उद्योगतो बड़प्पन पानेका कियाजावे और भाग्यवश निन्दित कार्य करनापड़े तब ऐसा कहतेहैं ॥

२७३ पानीमें रहकर मगर से बैर ॥ जिस आदमीसे सदैव कामपड़े उससेही वैर करके कोई निर्वाह करना चाहे तो सदैव हानि उठानी पड़ती तब ऐसा कहतेहैं ॥

२७४ पराई हँसी, गुड़से मीठी ॥ दूसरेकी हंसी करनेमें पैसा खर्च नहीं करना पड़ता यही कारण है कि सहजहीमें सब लोग दूसरेकी हँसी करनेको तैय्यार होजातेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२७५ पांसा पड़े सो दाव ॥ जैसा भाग्यवशात् आदमीपर बीतताहै तैसाही भुगतना पड़ताहै तब यह कहावत कहतेहैं ॥

२७६ पचे सो खाना, रुचे सो बोलना ॥ हरएक बात या काम योग्य करनेके लिये शिक्षाहै ॥

२८२ बावले गांवमें ऊंट आया, लोगोंने जाना परमेश्वर आया ॥ जहां कहीं गाँवड़ेके अज्ञानी लोग कोई साधारण पदार्थ देखकर उसको बडा और आश्चर्य कारक समझते तब ऐसा कहाजाताहै ॥

२८३ बासी बचे न कुत्ते खायँ ॥ जो काम परिमिततासे किया जावे और पीछे आधिक्यताकी आवश्यका आपड़े तब अथवा कंगाल आदमीसे जिसके खानेकेबाद रोटीका टुकड़ाभी नहीं बचता कोई मांगने आवे तब भी वह ऐसा कहताहै ॥

२८४ वक्तपड़े बांका, तो गधेसे कहिये काका जब अपना काम अटकता तो तुच्छ आदमीको बडप्पन देकर उसके साम्हनेभी दीनता करनी पडती है तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२८५ बापराज खाये न पान, दांत निकालें निकले प्राण ॥ जब कोई कंजूस आदमी जिसने कभी कोई करतूत न की हो और बडी २ बातें मारे तब ऐसा कहते हैं ॥

२९० बेलन कूदा, कूदी गौन ॥ जिससे कोई
र्मे भेदी बचन कहाजावे वह कुछभी ध्यानमें न लावे
न दूसरा चिढ़ पडे तब ऐसा कहतेहैं ॥

२९१ बाप न मारी मेंडकी, बेटा तीरन्दाज ॥
प जब कायरताके काम करता हो और बेटा बहा
रीकी बातें करे तब ऐसा कहाजाताहै ॥

२९२ बुड्ढीघोड़ी लाल लगाम ॥ जो काम जिस
वसरका है उसपर न करके कुअवसरपर कियाजावे
ब अथवा कुरूप शरीर होनेपर अधिक शृंगार किया
ाताहै तब भी ऐसा कहते हैं ॥

२९३ वक्त भूलता, परवात नहीं ॥ आपत्तिके
मय कोई कठोर वचन कहे और पीछे दैवयोगसे
ापत्ति चली जावे तो आपत्ति स्मरण न होके जब
ह कुवचन स्मरण आताहै तब ऐसा कहा जाताहै॥

२९४ बड़ेमियां सो बड़े मियां, छोटे मियां
ो शुभान अल्ला ॥ जब जेठेकी अपेक्षा छोटा भाई

२९९ बानियांसे सयानो, सो दिमानो ॥ (बानियां हरएक कार्य पूर्वापर विचारके बहुत सावधानीसे करता है) जब कोई अपनी चतुराई प्रगट करनेके लिये बनियेको बेवकूफ बनाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

३०० बिछौना देख, पैर फैलाना ॥ अपनी आमदनीके भीतर व्यय करनेके शिक्षार्थ यह कहावत कहते हैं ॥

३०१ बापसे बेटा सवाई ॥ जब बापसे बेटा किसीभी बातमें बढ़ चढ़ कर होता है तब ऐसा कहा-जाता है ॥

३०२ बांधे लंगोटी, नाम पीताम्बर दास ॥ कुछभी पास न होनेपर पर जो बड़प्पनका नाम रक्खे तब ऐसा कहते हैं ॥

३०३ बन्दर क्या जाने अदरखका स्वाद ॥

३०८ भौजीकी थैली, देवरा सराफी करे ॥ ज आदमी दूसरेके काममें अपना नाम चलाता है व ऐसा कहते हैं ॥

३०९ भैंसके आगे भागवत, मरे २ रोंथाय ॥ अज्ञानीके साम्हने अच्छे २ उपदेशोंका फल निष्फल होता तब ऐसा कहते हैं ॥

३१० भैंसबडी, के अक्कल ॥ जो लोग अकल को तुच्छ समझके धन बड़ा समझते हैं उनके भ्रम शोधनार्थ अथवा छोटे २ बालकोंकी बुद्धि जांचनेके लियेभी ऐसा कहते हैं ॥

३११ भोलेका रामदाता ॥ जब किसी सीधे आदमीको भाग्यवश सर्व प्रकारके सुख प्राप्त होते हैं तब ऐसा कहा जाता है ॥

३१२ भूतोंकिपर बेटाबेटी ॥ जिसके पास किसी पदार्थका होना निपट असंभव हो और तिसपर कोई मांगे तब ऐसा कहतेहैं ॥

३१८ भय विन, प्रीति नहीं ॥ (हरएक काम भयसे सुधरता अथवा भयके कारण लोग प्रीत भी करतेहैं) जब कोई आदमी निरंकुश होनेके कारण अप्रेम भावसे कार्य करता तब ऐसा कहाजाताहै ॥

३१९ भात छोडना पर साथ नहीं ॥ सुखको त्यागना अच्छा है पर साथ छोडना नहीं इसशिक्षाके लिये अथवा जो लोग जीभके लोलुपतासे साथ अथवा मेल तोडदेतेहैं उनके शिक्षार्थ यह कहावत कहतेहैं ॥

३२० भूखा बंगाली भात २॥ जो पदार्थ मनुष्य बहुतायतसे और सदैव खाता रहता है उसका अभ्यास पडजाताहै जब भूख लगती या आवश्यक्ता पडती तो वही मांग आता तब ऐसा कहतेहैं ॥

३२१ भागे भूतकी मूंछ ही सही॥जिससे कुछ भी मिलनेकी आशा न हो यदि थोडाभी मिलजावे या लेयावें तब ऐसा कहतेहैं ॥

३२२ मुंहदेखकर बातेंकरना॥ जो लोग अपनी

लोग योगके लिये धर्म काम करते हैं उनसे शुद्ध हृदय वाला जो धर्म काम करनेकी सामर्थ्य नहीं रखता ऐसा कहता अथवा जब संपत्तिवान पुरुष हरएक कामका सहल समझ अपनेको घरहीमे सर्व सुखी मानते हैं तब भी ऐसा कहा जाताहै ॥

३२८ मुंड मुंडाई तभीओलेपडे ॥ कोई काम अवकाश पाकर आरामके लिये कियाजावे दैवात इस प्रकारका दुःख उपस्थित हो कि उस कामके कारण अधिक दुःखदाई होवे तब ऐसा कहतेहैं ॥

३२९ मूर्ख वैद्यकी मात्रा, बैकुंठ की यात्रा ॥ जो मूर्ख वैद्य है उनसे कोई औषधि कराके जब आरोग्य होनेके बदले अधिक रुज ग्रस्त हो जाता है तब लोग ऐसा कहते हैं ॥

३३० मानो तो देव, नहीं तो पत्थर ॥ (इस संसारमें जितना कुछ संबन्ध है वह सब मानने से है विना मान्य बुद्धिके सब निरर्थक हैं जो कहते हैं कि

३३५ मांगे भीख, नाम लखपतिराय ॥ योग्य-ताके विरुद्ध नाम होने पर ऐसा कहा जाता है ॥

३३६ मा के पेट कुम्हार का आवा, कोई काला कोई गोर ॥ एक स्थानसे जो पदार्थ उत्पन्न होते वह भी भिन्न प्रकारके होते हैं इस बात की यथा-र्थताके लिये यह कहावत कहते हैं ॥

३३७ मेंडकी को भी जुकाम ॥ जो आदमी दृढ़ हैं और सुकुमारता का नाम भी नहीं जानते दि वे दूसरोंपर प्रगट करनेको सुकुमारता जनावें तब सा कहा जाता है ॥

३३८ मन जाने आप, माई जाने बाप ॥ गूढ़ रुषोंके हृदय का भेद ज्ञात न होते हुए ऐसा कहा जाता है ॥

३३९ मारने वालेसे बचाने वाला बड़ा है ॥ जब किसीको दुःख अथवा हानि पहुंचानेके उपाय करने पर भी भाग्यवशात कोई दुःख अथवा हानि न

तमाखू मांगने की भी आदत पडजातीहै जिन लोगोंको मांगनेकी आदतहै उनकी तथा तमाखू खानेवालोंकी निन्दामें ऐसा कहते हैं ॥

३४४ मा खाने न दे, बाप भीख न मांगने दे ॥ जब कोई काम लाभके लिये किया जाता हो पर उसमें कई लोग बाधक हो जावें तब ऐसा कहा जाताहै

३४५ मनमें भावे, मुंडी हिलावे ॥ जिसकी आन्तरिक इच्छा तो है पर लोगोंको बतानेको या लज्जित होकर इनकार करता है तब अथवा जिसको जो बात पसंद होती है उसके लिये जब वह किञ्चित् इशारा तो करता है पर लज्जावश मुंहसे कुछ नहीं बोलता तब भी ऐसा कहते हैं ॥

३४६ मेरे बापने घी खाया, मेरा हाथ सूंघो॥ जब कोई आदमी ऐसी दो बातोंको मिला देताहै जिनका कुछभी संबंध नहो तब ऐसा कहतेहैं ॥

३४७ मुखमें राम, बगलमें छुरी ॥ जो लोग

२५२ रिसानी बाई कुंभार टोंचे ॥ जब कोई आदमी ऐसे आदमीके द्वारा सताया जाकर रूस जाता है कि जिसका कुछभी न करसके, और फिर अपनेसे छोटे और तुच्छ लोगोंको अपनी संतुष्टताके लिये कष्ट देताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२५३ दोन कुमरईकी कुतिया ॥ (कहानी)
दोन और कुमरई, छोटे २ गांव पहुतही नजदीकहैं वहां एक कुतिया थी। एक दिनकी बातहै कि दोनों गांवमें ज्योनार हुई, कुतियाने सोचा कि दोनों जगहकी जूठन खाऊं इस लिये दो पहरको दोनमें जाकर देखा कि लोग भोजन कररहेहैं तब उसने सोचा यहां बचीं ठहरूं तबतक कुमरई जाऊं ॥ जब वहां गई तो देखा कि यहां भी लोग खारहेहैं। इस लिये दोनको जल्दीसे भागी तो पता देखतीहै कि लोग खाकर चले गये और जूठन भी बहकर लिपया तब भी कुमरई हुई कुमरईको भागी पर वहां भी यही हाल हुआ अन्तको

३५७ रहे बांस न बजे बांसुरी ॥ जब कोई आदमी अपने शत्रुके मूलतकको नाशकरनेका उपाय करते हैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

३५८ राजा मानै सो रानी ॥ छाना (कंडा) बीनती आनी ॥ जब किसी ओछे आदमीका महत्पुरुष बडप्पन अंगीकार करलेतेहैं तब सबको भी मानना पडताहै ऐसे अवसरपर यह कहावत कही जाती है ॥

३५९ राम २ भजना, यही काम अपना ॥ जो सन्त लोग संसारसे विरक्तहैं उन्हें जब कोई सांसारिक कामोंमें लगानेकी शिक्षा देनेलगता है तब ऐसा कहा जाताहै ॥

३६० रहतेथे वनखंडमें, रखातेथे चारो जैसो जेठमास तैसो बसकारो ॥ जो लोग सर्वदा वनमें रहते और सांसारिक आचार व्यवहार को नहीं जानते अथवा जो बिलकुल अज्ञान और गवाँर होतेहैं उनकी उपमामें यह कहावत कही जातीहै

३६६ लड़नादे पर विछुडनानदे ॥ जिस घरमें जो आदमी होतेहैं उनमें कुछ न कुछ खटपट अवश्य होतीहै कई लोग ऐसाभी कहतेहैं कि अलग २ होजाओ जिससे झगडा न हो तब सज्जन लोग जो देश कालके ज्ञाता हैं इस कहावतको कहकर संतुष्ट करदेतेहैं ॥

३६७ लोभी गुरू लालची चेला ॥ जब दुष्टको दुष्टही शिक्षा दाता मिल जाता या एकसे दो नीचोंका संबंध होजाताहै तब लोग ऐसा कहतेहैं ॥

३६८ लडकेकी दोस्ती, जीका जंजाल ॥ अज्ञान आदमीसे मुहब्बत करके जब समय कुसमय का विचार न होते हुए सताये जाते हैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

३६९ लड़केकी यारी, गधेकी सवारी ॥ अविवेकीसे मित्रता करनेसे उसकी अविवेकताके कारण सदैव घड़नाभी उठाना पडतीहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३७५ सूझैन बाजे, नैनसुखनाम ॥ जब योग्य-ताके विरुद्ध नाम होता है तब भी ऐसा कहते हैं ॥

३७६ सिरें दालरोटी, सबैबात खोटी ॥ सबसे पहिले खानेकी फिकर कीजाती तब ऐसा कहते अथवा हिन्दुओंकि लिये सदैवसे दाल रोटी खाते आये हैं आजकलके आचार व्यवहार देख नवयुवकोंकि शिक्षा-र्थभी यह कहावत कहते हैं ॥

३७७ सीधी अँगुली, घीव नहीं निकस्ता ॥ जब दुष्ट मनुष्यसे कोई आदमी अपना काम सीधी तरह निकालना चाहे और न निकले तब ऐसा कहा जाता है ॥

३७८ सिरफोड़ रहना, जाँघ जोड़ खाना ॥ जब कोई आदमी लड़ाई होनेपर अपने कुटुम्बमें अल-ग होना चाहता है तो उसके शिक्षार्थ यह कहावत कही जाती है ॥

३७९ सिर मुँड़ाये, मुड़ांइटका ॥ जब काम

हुत भारी करना है और कोई आदमी थोड़ा
करनेपर कहे कि अबतो थोड़ा रहगया तब ऐसे
जाता है ॥

८० सौ सुनारकी, एक लोहारकी ॥ जब
आदमी किसीको थोड़ा २ बार २ सतावे परंतु
एकही बारमें ऐसा सतावे कि सबका बदला ले
ऐसा कहा जाता है ॥

८१ सांचको आंच क्या ॥ जब कोई आदमी
लताहो और लोग घुड़कावें तो वह डरता नहीं
कहते हैं ॥

२ सब रात पीसा ढँकनी (पारे) में
॥ जब कोई काम बड़े परिश्रमसे तो किया
अन्तमें फल तुच्छ मिले तब ऐसा कहते हैं ॥

३ सारा जाता देखिये आधा दीजे बांट ॥
हानि होतीहो और दूसरेको आधी देनेसे बच
तो देदेना चाहिये जो लोग ऐसे निर्बुद्धि होते

कि उनका माल चाहे नष्ट होजावेपर देनेमें तो हाथ
रता है तब ऐसा कहा जाता है ॥

३८४ सुहाते की लात सही ॥ अनसुहातेकी
तनहीं ॥ जब मित्रकी गाली भी कोई सहे परा
की साधारण बात भी बुरी लगे अथवा जहां प्राप्ति
ी आशा है वहां दुर्वचन सह लेवे पर जहां प्राप्ति नहे
ां की साधारण बातसे भी अप्रसन्न हो तब ऐसा
हा जाता है ॥

३८५ सूना घर चोरोंका राज ॥ जिस घरमें
ोई दबावदार आदमी नहीं उसके आदमी जब मन-
ानी चाल चलने लगते हैं तब ऐसा कहते हैं ॥

३८६ सुकुमार बीबी, चढाई काटदेंगा ॥ जब
ोई बड़ा आदमी कंजूसपन और भद्दी पोशाक पहिन-
ा है तब ऐसा कहा जाता है ॥

३८७ संपत्तिसे भेट नहीं, बातेंकि ठाटठे ॥
कहानी॥ किसी समय एक ग्वाल जो अति ही दरिद्रि

था अपनी स्त्रीसे बोला कि परमेश्वर धन देवे तो '
भैंस अवश्य लेना चाहिये स्त्रीने कहा अच्छा
भैंस आजावे तो अच्छा है मैं अपने भाईके घर छा
दे आया करूंगी तब उसका पति क्रोध करके क
लगा क्योंरी ? मैं क्या तेरे भाईके वास्ते भैंस लेऊं
ऐसी २ बात चीतमें मार पीटकी नौबत गुजरी) ज
मूर्ख आदमी निष्प्रयोजन आपसमें झगडने लगते
तब ऐसा कहा जाताहै ॥

३८८ सोवतथी, अरु विछी } किसी आदमी
पाई ऊंघतेको विछौना } को कोई करन
हो और तिसपर कोई आश्रय अथवा बहाना मिल
जावे जिससे उसका मनमाना काम पूर्ण हो सके अथवा
जब आलसी लोग कुछ बहाना करके बैठ रहतेहैं त
भी ऐसा कहाजाता है ॥

३८९ सांचीकहे सुखरहे ॥ जो लोग सत्य बो
लते हैं वे यथार्थमें सुखी अर्थात् निश्चिन्त रहते हैं
... शिक्षार्थ ऐसा कहतेहैं ॥

३९० सांचेका रंग रूखा ॥ सदेवकी चाल कि न्तु बात लोगोंको बुरी लगती और झूंठी चापलूसीसे सब प्रसन्न रहतेहैं जब ऐसा अवसर आता है तो यह कहावत कही जातीहै ॥

३९१ शौक का विवाह, सनौरोंके उजियाले॥ कोई काम जब बडे उत्साहसे तो कियाजावे पर उसमें काम सब कंजूसीसे किया जावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

३९२ सब झूठा मरगये, तुमको तापभी न आई ॥ अति पापी आदमीको जब पाप पुन्यसे नहीं डरता तब ऐसा कहतेहैं ॥

३९३ सौवार चोरकी, एकवार साहुकी ॥ जब आदमी कईबार दोष कर बचजाता पर एकबार पकडे जानेपर पूरा २ दंड पाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३९४ सुख कहना जनसे ,दुःख कहना मनसे॥ जो लोग सुखमें तो किसीसे बोलते भी नहीं पर दुःखमें — २ रोते फिरतेहैं उनके शिक्षार्थ यह कहावत है ॥

३९९ सवीसे सूम भला, जो शीघ्र उत्तरदे ॥ आदमी किसीका बहुत समय व्यर्थ खोता और नदेनेका उत्तर नहीं देता पीछे घंटे दोघंटेमें कुछ वे तब ऐसा कहाजाताहै ॥

४०० सबकेगुरु गोवर्द्धन चेला ॥ जो आदमी से चालाक और चतुर होताहै उसकी उपमामें यह हावत कहतेहैं ॥

४०१ सेवाकाफलमेवा ॥ जो जिसकाममें परि- न करताहै उसमें फलभी मिलताहै तब ऐसा कहा ताहै ॥

४०२ सुईभर छान, मूसलभर अंधेर ॥ जहां हुत बारीक बातका विचार कियाजाता पर मोटी २ तोंपर ध्यान भी नहीं दियाजाता तब ऐसा कहतेहैं॥

४०३ सूरतसे, कीमत घडी ॥ अच्छा रूप हो- ते जब पदार्थका मूल्य बढजाता तब ऐसा कहने

१ आदमी दूध डालेंगे यदि उसमें हम १ घड़ा पानी
ले आवेंगे तो क्या जान पड़ेगा, ऐसासोच सब एक२
ड़ा पानी डाल आये । बादशाहने सुबह आकर
खा कि हौज पानीसे भरा है दूधका नाम नहीं तब
रिबल को बुलाकर सब हाल कहा । बीरबल बोले,
हां पनाह । मैने तो पहिले ही अर्ज किया था ॥

४०६ हाथमें सुमरनी, बगलमें कतरनी ॥ जो
ोग बाह्य तो साधुवृत्ति रखते हैं पर अंतरमें बड़े
और [illegible] हैं उनकी यथार्थता बतानेको यह
[illegible] ॥

[illegible] जौंहरी जाने ॥ जो मनुष्य
अनभिज्ञ है जब उससे ऐसी
[illegible] है तब ऐसा कहते हैं ॥
[illegible] नहीं ॥ बहुधा प्रति-
बिना जांचे केवल लोगोंके
[illegible] उसी परसे किसीका

लिये बहुत २ विनती करते हैं तब ऐसा कहा जाताहै।

४१३ हाथमें सुमरनी, बगलमें कतरनी ॥ जो लोग धर्मात्मा का रूप धारणकर लोगोंको ठगते हैं उनकी यथार्थता प्रगट करने को यह कहावत कहते हैं ॥

४१४ हाथी निकल गया, पूंछ रह गई ॥ जब किसी कार्यका बहुतसा अंश होजावे और कुछ शेष रहे तब ऐसा कहतेहैं अथवा आदमी जब किसी कामका बहुतसा भाग तो करदेवे पर थोड़ेके लिये असमंजस करे तब ऐसा कहतेहैं ॥

४१५ हाथ कंगनको आरसी क्या ॥ जो काम-या बातसाम्हने होती हो और कोई उसके लिये पूंछा पूंछी या निर्णयकरे तब ऐसा कहतेहैं ॥

४१६ हिसाब कौडीका, बखशीश लाखकी ॥ जो लोग हिसाब तो कौडी २ का करले पर दान लाखोंका कर देतेहैं उनके लिये यह कहावत कहतेहैं ॥

काम करते हुए दैवयोग से कोई दुःख उत्पन्न होजाताहै तब अथवा जो लोग मनमें कपट रखके धर्मकाम करते और जब उनकी मनसाके अनुसार दशा होतीहै तब भी ऐसा कहा जाताहै ॥

४२१ हाथीके दांतमें रांढा (डॉंडा) ॥ जब बड़े आदमीको तुच्छभेंट दीजाती और वह उसे तुच्छ समझता या बहुत खानेवालेको अल्प भोजन दिया जावे तब ऐसा कहतेहैं कभी२ बलवान्के हाथसे छोटा काम सिद्ध न होनेपरभी ऐसा कहा जाताहै ॥

४२२ हाथीके दांत खानेके और, बतानेके और॥ जब किसी आदमीके अभ्यंतरमें तो और बात रहतीहै और दूसरोंसे औरतरह की बातें करताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

४२३ हंसा तो सरवर गये, भये कागा परधान ॥ जहां पहिले सज्जन स्वामी द्वारा अधिकारके मनुष्योंको सुख मिलतारहा हो यदि पीछे कोई दुष्ट उस स्थानपर आकर सतावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

८ आती लक्ष्मीको लात मारना
९ आंख मीची तो सदा अँधेरा
१० आंत भारी तो शीश भारी
११ अंधेके आगे दीपक रखना
१२ आमोंकी कमाई नींबूमें गमाई
१३ आमा फले तो नीचानमे
१४ आग खाय ते आंगर उगले
१५ आटेमें नमक, सच्चेमें झूठ
१६ आन फँसे भई आन फँसे
१७ आपकी लापसी पराई सो कुसकी
१८ आप बीती के परबीती
१९ आप लिखे और खुदा बांचे
२० आतेका बोल बाला जातेका मुंहकाला
२१ उद्धवका लेना न माधवका देना
२२ उठाऊका माल बटाऊमें जाय
२३ ऊंगतेका पांव पड़ना

४० गूंगाकी पारसी
४१ ग्रहणमें सांप मारना
४२ गांवका जोगी आन गांवका सिद्ध
४३ घासकी गंजीका कुत्ता खायनखानेदे
४४ चंडाल चौकडी
४५ चनेसे फोड़ना
४६ चने खाकर हाथ चाटना
४७ चमारका मठा (छांछ)
४८ जलेपर नमक छींटना
४९ जहां न पहुंचे रवि तहां पहुंचे कवि
५० झट मँगनी पट व्याह
५१ गली भूलीमें जाऊं एक संदेशालेती जाऊं
५२ ढुकरो मरी सो मरी पैयम पर देखगये
५३ ढेढकी बापडी खाटी होय कि मीठी
५४ दुनियां झुकतीहै झुकाने वाला चाहिये
५५ देखतेकी झुगाई अंधाले गया

५६ दोस्तीमें लेन देन, वैरका मूल
५७ धप्पा लगाकर माफ मांगना
५८ धोबीका भाई पत्थर
५९ धोबी बेटा चांदसा
६० नकटीके साम्हने नाक पकड़ना
६१ नक्कार खानेमें तूतीकी आवाज
६२ न मिली नारी तो सदा ब्रह्मचारी
६३ नाक कटा तो कटा, परघी तो चटा
६४ नाचने वालेके पांव फरके
६५ नौकरी पाथर परकी जड
६६ पराया लडका पहाड चढाना
६७ पड़ोसीकी दो फोड और मेरी एक
६८ पत्थर पर पानी
६९ पत्थर पिघलना
७० पाहुनेसे सांपपकडाना
पांच अंगुली बराबर नहीं होतीं

७२ पांच अंगुली पहुंचो शोभे
७३ पानीसे पतला क्या
७४ पानीमें आग लगाना
७५ पाप पहाडपर चढ़कर पुकारे
७६ पैसा कहीं झाडपर नहीं फलते
७७ पोथा सो थोथा पाठैते साथे
७८ बकरेकी मा बचेकी कबतक खैर
७९ बबूलबोकर आम खाना मांगेगी
८० बारह बर्ष दिल्लीमें रहे काम भरभूंजेकाकिया
८१ बिच्छूका मंतर न जाने सांपके बिलमें हाथ डाले
८२ भय बिनु प्रीत नहीं
८३ भई गति सांप छछूंदर केरी
८४ भरमभारी खीसा खाली
८५ भरोसेकी भैंस पाडा ब्यानी
८६ भला एकको पितरकेरे करे एकको बाय

८७ भूखा सिंह तृण न खाय
८८ भूल सराकी, गौन गधाकी
८९ भूरका लड्डू खाय सो पछताय, न खाय सो पछताय
९० मनमुंडा विन माथा मुंडा किसकामका
९१ मखमलीजूती
९२ मारसे भूत भागे
९३ मारतेके पीछे और भागतेके आगे
९४ मूतदियाजलना
९५ मौत मुंह मांगी न आवे
९६ मोतीका पानी उतरा सो उतरा
९७ राखपत तो रखापत
९८ रास्तेमें हगे और आंखें दिखावे
९९ रांधे ते रानी पानीभरेते छोंडी
१०० राज नहीं है पोपाबाईका
१ राजा रूटे तो किससे कहे

१०२ राजा कर्णका पहरा है
१०३ रोड़ा मीठा हो तो सियाल न छोडे
१०४ लोहके चने
१०५ लोमड़ीको अंगूरखदे
१०६ लेनादेना गांडूका काम लड़नेको मोजूद
१०७ लेना उसका देना नहीं
१०८ वर मरोके कन्या मरो, मेरी गौरका भा-
डाभरो
१०९ बहतीगंगा पांवधोना
११० वेश्या बरस घटावही योगी बर्ष बढाय
१११ व्याजके आगे घोड़ा नहीं दोडसक्ता
११२ शेखचिल्ली का विचार
११३ सबमरजांय ओर में सबका लाडू खाऊं
११४ सब सबकी संभालना में अपनी फोडताहूं
११५ सांप टेढाचटेपर पांवांमें सीधा
११६ सात पांचकी लाठी एक जनेका बोझ
११७ सातपांच मिटसीले काज

११८ सिन्धु तैरकर सरस्वतीमें डूबना
११९ सिंहका बच्चा सिंहही होय
१२० सिर सलामत तो पगड़ी बहुत
१२१ सिफारिशकी गधी घोडेको लातमारे
१२२ सुखमें निद्रा दुःखमें राम
१२३ सौचूहेमारकर बिल्लीहजको चली
१२४ सौदवाने एक हवा
१२५ सोनेको दाग न लागे
१२६ हरनवाले बिसमिल्ला
१२७ हनता को हनिये पाप दोष ना गनिये
१२८ हलालमें हरकत हराममें बरकत
१२९ हारिल लकड़ी पकड़ी सो पकडी
१३० होन हार बिरवान के होत चीकने पात

इति प्रथमकुसुम समाप्त

द्वितीय कुसुम ॥

अंगरेजी

Children of the same parents.

१ (चिल्डरन आफ् दि सेम पेरेन्ट्स) एकही मा बापके बालक, एकही मूंगकी दो फाड़, ॥ व्यवहारमें समानता बतलानेका जब अवसर आता तब यह कहावत कही जातीहै ॥

Cocks Make free of horses' corn.

२ (कॉक्स मेक फ्री आफ् होर्सेस कॉरन) पारके पैसे दिवाळी ॥ जो लोग दूसरेके पैसे से या बेटा पारके कमाये हुए धनसे आनन्द मनाता और उसे व्यर्थ व्यय द्वारा उड़ाताहै तब यह कहावत कहतेहैं ॥

Clouds that the Sun binds.

३ (क्लौड्स दैट दि सन बाइन्ड्स) हाथके किये को क्या पछताना ॥ जब कोई आदमी अपने हाथसे कुछकाम बिगडनेपर पछताने लगता तब ऐसा कहतेहैं ॥

Common fame is often a Common liar.

४ (कॉमन फेम इज ऑफिन ए कॉमन लाए) कोई माथे मूड़ेजती नहीं आधे ओढ़े सती नहीं ॥ कोई मनुष्य जो जिसका चिन्हहै उससे रहित होनेपर पहिचाना नहीं जाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

Confide not in him who has once deceived yo

५ (कनफाइड नॉड इन हिम हू हैज वन्स डिसी वुडयू) कुत्ता एकहीबार रोटी लेजाताहै ॥ जो आदमी किसीके साथ एकबार छलकरे तो फिर उसके चैतन्य होजानेसे कपटीका कपट दुबारा नहीं चल सक्ता तब अथवा जो आदमी किसीसे एकबार ठगा गयाहो तो दुबारा होशयार रहताहै तबभी ऐसा कहतेहैं ॥

Confidence is the companion of success.

६ (कॉनफीडेन्स इज दि कॅम्पेनियन ऑफ ...) सफलताका मूल विश्वासहै ॥ दुनियां ... काम विश्वाससे चलतेहैं जब कोई मनुष्य दूसरे

विश्वास न करके हानि अथवा दुःख पाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

Consciences and covetousness can never coalesce.

७ (कॉन्सीएन्सेज् एन्ड कवेचिअस नेसकेन नेवर केलेस) ईमानदारी और बेईमानी एक साथ नहीं ॥ कोई आदमी ऐसी दो बातें जो एक दूसरेसे विरुद्ध हों (जैसे रोना और हंसना) एक साथ करना चाहता तब ऐसा कहतेहैं ॥

Contempt will soon kill an injury than revenge

८ (कन्टेम्पूट विल सून किल इन इंजरी दैन रिवेन्ज) जो गुड़दीनेही मरे क्यों विष दीजे ताहि ॥ जो भले करनेहीसे अपना काम सफल होनो बुरा करके न करना चाहिये जो लोग इसके विरुद्ध चलतेहैं उनके लिये ऐसा कहतेहैं ॥

Contentment can never really be purchased.

९ (कन्टेन्टमेन्टकेन नेवर रियली बी परचेस्ड) संतोष कभी नहीं खरीदा जासक्ता ॥ संतोष

यह एक स्वाभाविक गुण है जो मनुष्य अर्थात्
देनेसे प्राप्त नहीं होता जिनका संतोषी स्वभावहो
पर दूसरेकी देखा देखी संतोष करनेवालाको दुः
करतेहैं उनके विषयमें यह कहावत कही जातीहै

Counsel and wisdom achieve more & gr
exploits than force.

३० (कौन्सिल ऐंड विज़्डम एचीव मॉर ऐंडग्रे
एक्सप्लाइट्स दैन फोर्स) बलसे कल बढ़तीहै
मनुष्य स्वयं उतना काम नहीं करसक्ता जितना
बलकी सहायतासे करसक्ताहै तब अथवा क
कामके करनेकी जब कोई सहज रीति बतावे
भी ऐसा कहतेहैं अथवा बलकी अपेक्षा बुद्धि
जब अधिक काम निकलताहै तोभी ऐसा कहा ज

Covetous men are bad sleepers.

(कॉवेचस् मेन् आर बेड् स्लीपर्स) लो
और निद्रा नहीं ॥ इस संसार मे
हैं वे धन संचयके लिये रात्रि दिवस

कते रहते हैं यहाँ तककि घडीभर आराम नहीं पाते। कोई लोभी कहता है कि भाई हम को कभी भी सुख नहीं, तब ऐसा कहते हैं ॥

Courage without conduct is like ship without ballast.

१२ (करेज विदौट् कान्डक्ट इज लाइक ए शिप विदौट्-बालास्ट) होशयारीके विन हिम्मत नाहक है ॥ आदमी जब हिम्मतवान तो हो परंतु होशयारीन होनेसे कोई भी कार्य सिद्ध नहीं कर सक्ता तब ऐसा कहते हैं ॥

Crosses are ladders that lead toheaven

१३ (क्रोसेस आर लैडर्स दैट् लीड टू हेवन्) विना मरे स्वर्ग न दिखाय॥ कोई काम जब अपनी ठीक मरजीके माफिक अपने ही किये विना नहीं बनता अथवा कोई आदमी अपने कहनेके अनुसार ठीक २ काम नहीं करता तब भी ऐसा कहते हैं ॥

Danger past God is forgotten.

१४ (डेन्जर पास्ट गाड इज फार्गाटन) दुः
रामा, सुखमें वामा ॥ सभी आदमी दुःखमें ईश्व
और सुखमें स्त्री का स्मरण करते हैं तब ऐसा
जाता है ॥

Dead Man tells no tale.

१५ (डेड मैन टैल्स नो टल्) मुआ आद
माथा नहीं उठाता ॥ जो बात निश्चित तथा
सिद्ध है उसमें यदि कोई आश्चर्य जनक अपूर्व
का होना बतावे तब उसकी असत्यता प्रगट करते
ऐसा कहते हैं ॥

Do not spur a free horse.

१६ (डू नॉट स्पर ए फ्री हॉर्स) तेज घोड़े
एड़ी क्या ॥ जो आदमी अपने काममें तेज है
कामको इस प्रकार सावधानी और योग्यतासे कर
... कुछ कहनेकी आवश्यक्ता नहीं हो
परभी कोई ऊपरसे ताडना करे तब ऐस
...ता है ॥

Deserve success and you shall command it.

१७ (डिजर्व सक्सेस एन्ड यू शैल कमान्डइट)
पै को सब लोग ॥ जब आदमीके अच्छे वर्ताव
कारण दूसरे लोग उसके साथ भी अच्छा वर्ताव
या मित्रता रखकर सुख दुःखमें सहायक होते हैं तब
सा कहा जाता है ॥

Diet cures more than the Doctors.

१८ (डाएट क्योर्स मोर देन दि डॉक्टर्स) पथ्य
ी उत्तम चिकित्साहै ॥ जब अवगुणकारी
दार्थोंके खानेसे किसीको रोग होजाताहै तब वह
ौषधि तो करता है परंतु पत्थ्य नहीं रखता तब ऐसा
हजाताहै ॥ अथवा जो मनुष्य प्रकृति अनुसार
जन करके निरोगी रहता है उसकी प्रशंसामें भी यह
हावत कहतेहैं ॥

Divine the power of giving with the will to
ive oppurtunity.

१९ (डिवाइन् दि पावर आफ गिविंग विथ दि

Every one thinks his his shilling worth thirteen ce

२८ (एव्री वन थिंक्स हिज शिलिंग वर्थ थर्टीन स) अपनी सो लापसी, दूजेकी लेई ॥ संसारमें धा मनुष्य ऐसे हैं कि अपने और दूसरेके पास सा पदार्थ होनेपर अथवा अपने सरीखा ही काम रेको करनेपर अपनेको अच्छा और दूसरेको बुरा हतेहैं तब यह कहावत चरितार्थ होतीहै ॥

Evry thing rises but to fall.

२९ (एव्री थिंग राइजेज बट टु फाल) चढ़े सो ड़े ॥ आदमी जो काम सदैव करता है उसमें हानि क न एक दिन अवश्य उठाता है दूसरे जब कोई दमी या बात बढते २ बढ जाती है वह अन्तमें सी समय न्यून दशा को अवश्य प्राप्त होता ही इसी कार जो अधिक अभिमान करता है उसका अपमान कभी न कभी होता है तब ऐसा कहते हैं ॥

Every tub must smell of the wine it holds.

३० (एव्री टब मस्ट स्मेल आफ दि वाइन इट

Every one thinks his his shilling worth thirteen pe

२८ (एवी वन थिंक्स हिज शिलिंग वर्थ थर्टीन त) अपनी सो लापसी, दूजेकी लेई ॥ संसारमें धा मनुष्य ऐसे हैं कि अपने और दूसरेके पास सा पदार्थ होनेपर अथवा अपने सरीखा ही काम रेको करनेपर अपनेको अच्छा और दूसरेको बुरा तेहैं तब यह कहावत चरितार्थ होती है ॥

Evry thing rises but to fall.

२९ (एवी थिंग राइजेज बट टु फाल) चढ़े सो ई ॥ आदमी जो काम सदैव करता है उसमें हानि न एक दिन अवश्य उठाता है दूसरे जब कोई दमी या बात बढते २ बढ जाती है वह अन्तमें सी समय न्यून दशा को अवश्य प्राप्त होता ही इसी र जो अधिक अभिमान करता है उसका अपमान कभी न कभी होता है तब ऐसा कहते हैं ॥

Every tub must smell of the wine it holds.

३० (एवी टब मस्ट स्मेल आफ दि वाइन इट

हाथ लाडू नहीं खाये जाते ॥ जो आदमी लाभ ...क सबही काम जल्दीसे इकदम करनेके लिये छट पटाते हैं उनके उपदेशार्थ यह कहावत है ॥

Fancy passeth beauty.

३४ (फैन्सी पासेथ ब्यूटी) मन मिले जिसकी जाति क्या पूंछना॥ जब किसी आदमीको जो पसंद आया उसके विषयमें सर्वप्रकार के अच्छे बुरे निर्णय जब व्यर्थ जातेहैं तब ऐसा कहतेहैं ॥

Fetters though made of gold, are fetters still.

३५ (फेटर्स दो मेड आफ् गोल्ड आर फेटर्स स्टिल) सोनेकी बेड़ी क्या बेडी नहीं कहलाती ॥ यद्यपि पदार्थ एकही आकारके व एकसेही सुखदाई दुःखदाई हों पर उनको समय अथवा मूल्य या उनकी अवस्थाके अनुसार मान्य दिया जाताहै तब यह कहावत कहतेहैं

Ever spare, ever bear.

३६ (इवर स्पेयर इवर बेर)मियां जोड़े पई२ खुदा उठावे कुप्पा ॥ जब लोभी आदमी अपने

कोई दूसरा करै और फल दूसरा पावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

He that wears black, must hang a brush at his batch.

४० (ही दैट वेअर्स ब्लैक मस्ट हैङ्ग ए ब्रुश एट हिज् बैच) भेड़िया धसान ॥ सदैवकी चालको जब सब आदमी बिना निर्णय अंगीकार या ग्रहण किये जातेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

He robes his belly to provide for his back.

४१ (ही रोब्स हिज् बैली टू प्रोवाइड फार हिज बैक) घरमें ऊंदरे डंड पेलैं, बाहिर बडी २ बातै मारैं ॥ जिसके घरमें पैसा तो है ही नहीं पर लोगोंमें बडी २ शेखी हांकता है अथवा चने तो खाने को न मिलें पर चांवल बतलाताहै तब यह कहावत कहतेहैं

He adopts new views for loaves & fishes.

४२ (ही इडापुसन्यू न्यू फार लूवस ऐन्ड फिशेश) खानेके पीछे बावा होना ॥ जब आलसी अथवा

निरुद्योगी पुरुष खानेसे तंग होजाते हैं यद्यपि ज्ञा
और विवेक कुछभी नहीं पर पेट पोषणके ल
[साधु] बनजाते हैं ॥ जैसा कहाहै—नारि मरी ग
संपति नासी, मूड मुडाय भये सन्यासी ॥ ऐसे लोगोंके
लिये यह कहावतहै ॥

If one will not another will.

४३ (इफ वन विल नॉट अनादर विल ॥ जा
कूकड़ा होता क्या वहीं सुबह होता ॥ यदि को
आदमी इस बातका घमंड करे कि अमुक काम मे
विना न होगा यह विचार निर्मूल है ऐसे निर्मूल विचा
करनेवालोंके लिये यह कहावत कही जाती है ॥

If a man once fall all will tread upon him.

४४ (इफ ए मैन ओवंस फाल ऑल विलट्रीड
अपान हिम) मरतेको सब मारे ॥ जो लोग दीन
उनहींको सब सतातेहैं क्योंकि वे बदला नहीं लेसके
और ऐसेही अवसर पर यह कहावत कही जातीहै ।

It is not lost what a friend gets.

४५ (इटे इज नॉट लास्ट व्हाट ए फ्रेन्ड गेट्स) जो

खिचडीमें ढुला ॥ जिससे जिसका मिलना संभवहै और विना प्रेरणाके वह नियमित समयके पहिलेही स्वयमेव मिलजावे अथवा जिसका जिससे मिलना संभवहै उसीकी ओर ढुले तो ऐसा कहतेहैं ॥

Like dog & cat.

४६ (लाइक डाग एन्ड केट) बिल्ली चूहे की दोस्ती ॥ जब दो ऐसे व्यक्तिकी मित्रता हो जिनमें एक दूसरेको डरता हो अथवा दूसरा उसे भयभीत किये रहता हो तब ऐसा कहते हैं ॥

A man is known by the company he keeps.

४७ (ए मेन इज नोन बाइ दिकम्पनी ही कीप्स) जैसे अन्नकी तैसी डकार ॥ जब जैसे आदमी को तैसेही सुहबती मिल जाते हैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

Marriage is honorable in all & the bad indefoled

४८ (मेरेज इज आनरेबिल इन आल एन्ड दि बेड ऐनडी फाइल्ड) सासरे जानेवाली कोई छिनाल

[illegible]पोषी पुरुष खानेसे तंग होजाते हैं परी
और विवेक कुछभी नहीं पर पेट पोषके ए[illegible]
[साधु] बनजाते हैं ॥ जैसा कहाहै—नारि मुई [illegible]
[illegible] नाशी, मूड मुडाय भये सन्यासी ॥ ऐसे ढों[illegible]
लिये यह कहावतहै ॥

[illegible] one will not another will.

१३ (इफ़ वन विल नॉट अनादर विल । [illegible]
[illegible] होता क्या वहीं सुबह होता ॥ यदि [illegible]
[illegible] इस बातका घमंड करे कि अमुक [illegible]
[illegible] न होगा यह विचार निर्मूल है ऐसे [illegible]
[illegible] के लिये यह कहावत कही जाती है।

[illegible] fall a [illegible]

१३ (

[illegible]

सेचर्डीमें ढुला ॥ जिससे जिसका मिलना संभवहै ै विना प्रेरणाके वह नियमित समयके पहिलेही स्वयमेव मिलजावे अथवा जिसका जिससे मिलना संभवहै उसीकी ओर ढुले तो ऐसा कहतेहैं ॥

Like dog & cat.

४६ (लाइक डाग एन्ड कैट) बिल्ली चूहे की दोस्ती ॥ जब दो ऐसे व्यक्तिकी मित्रता हो जिनमें एक दूसरेको डरता हो अथवा दूसरा उसे भयभीत किये रहता हो तब ऐसा कहतेहैं ॥

A man is known by the company he keeps.

४७ (ए मैन इज नोन बाइ दिकम्पनी ही कीप्स) जैसे अन्नकी तैसी डकार ॥ जब जैसे आदमी को सेही सुहबती मिल जाते हैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

Marriage is honorable in all & the bad indefoled.

४८ (मेरेज इज आनरेबिल इन आल एन्ड दि ड ऐनडी फाइल्ड) सासरे जानेवाली कोई

(५१) एपिचर दैट ऑफन गोज टू दि वैल ब्रेक्स ऐट लास्ट.) पापका घड़ा एक दिन फूटता है ॥ जो (पाप) कर्म गुप्त रीतिसे किये जाते हैं वे एक न एक दिन प्रगट हो ही जाते हैं तब ऐसा कहा जाता है ॥

Plenty makes ~~daidty~~ dainty

५२ (प्लेन्टी मेक्स डैनटी) जितना गुड़ डालो उतनाही मीठा ॥ किसी काममें जितना श्रम व्यय अथवा विचार अधिक किया जावेगा उतनाही बनेगा यह शिक्षामय कहावत है ॥

Small rain will lay a great dust.

५३ (स्मालरैन बिल ले ए ग्रेट डस्ट) अधूरो घड़ा छलकै ॥ जब अधूरे काममें गड़बड़ और बुराई उत्पन्न होती तब ऐसा कहा जाता है ॥

To stop the mouth of a dog with a sop.

५४ (टू स्टॉप दि मौथ ऑफ ए डॉग विथ ए सॉप) भूकते कुत्तेको रोटीका टुकडा॥ जो मनुष्य

भंगड़ाई करता है वह कुछभी पाने पर जब चुप चाप हो जाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

Strive not to vie with the powerful.

५५ (स्ट्राइव नॉट टू वाइ विथ दि पावर फुल) बड़े के साथै छोटा जाय ॥ नहीं मरे तो मांदो थाय ॥ जब कोई छोटा मनुष्य किसी भी विषयमें बड़े आदमी की बराबरी करके दुःख पाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

Such as boast must foil much.

५६ (सच एज बोस्ट मस्ट फेल मच) अहंकार मोतकी निशानी है ॥ जब घमंडी आदमी माप आप दुःख पाते तब ऐसा कहा जाता है ॥

Solitude is at times the best society.

५७ (सालिट्युड इज एट टाइम्स दि बेस्ट सुसा यटी) जंगल में मंगल॥ जब किसी समय पर कि काप व स्थानमें सुख होनेकी संभवना किसीको नहीं है और यदि किसीको सुख प्राप्त होवे तो ऐसा क ... है ॥

Set bounds to your zeal bp discretions.

५८ (सेट् बौन्डूस टू यूअर जील बाइ डिसक्रीशन) मनके घोड़ेको विवेक की लगाम ॥ इस संसारमें चित्त घोड़ेसे बढ़कर चंचल है यदि वह विचार रूपी लगाम के द्वारा वश न किया जावे तो हानि होता है इसलिये हरएक बातमें जो विचाराविचार न करके दिलके माफिक करते हैं तब ऐसा कहा जाता है ॥

Sweet are the slumbers of the virtuous.

५९ (स्वीट् आर दि स्लम्बर्स ऑफ दि वरचुअस) साँचा सुखसे सोवे ॥ जब कोई बात प्रगटमें बुरी मालूम होती हो और परिणाम में अच्छी तथा लाभकारी हो जैसे कडवी औषधि तब यह कहावत कही जाती है ॥

Set not your house on fire to le revenged of tl e moon.

६० (सेट नाट यूअर हौस ऑन फायर टू बी रिवे

अदिसून) चन्द्रमासे वैरलेनेको घर न जलाओ जब कोई नुकसान करते वडेसे वैर तथा वदला लेन तय्यार होता है तब ऐसा कहते हैं ॥

Soft woods ate hard argeumnts.

६१ (साफ्ट् वर्ड्स् आर हार्ड आर्ग्युमेन्ट्स् ।) मृदु भाषण वडी विनती है ॥ मीठे वचन बोलो वालेके सब मित्र तथा सहायक होते जिससे उसका कैसा भी कठिन काम क्यों न हो शीघ्र सिद्ध हो जाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

The burnt child dreads the fire.

६२ (दिबर्न्ट चाइल्ड ड्रेड्स दि फायर) दूधका जला छांछ फूंक २ कर पीता है ॥ जो आदमी अम [illegible] से एकवार किसी काममें हानि उठा लेता [illegible] भी उसमें सहल भी काम करता हो [illegible] विचारीसे करता तब ऐसा कहते हैं ॥

[illegible] stomach loaths the honey comb.

दि फुल स्टमक लूथ्स दि हनी कोम्ब) भ[illegible]

पेटपर शक्कर खारी ॥ जब कोई भर पेट खा चुकता है फिर उसे कैसा मीठाभी पदार्थ क्यों न खिलाओ वे स्वाद लगता है तब ऐसा कहते हैं ॥

Throw not pearls before the swine.

६४ (थ्रो नॉट् पर्लस बिफोर दि स्वाइन) भैंसके आगे भागवत॥ जब अज्ञानी तथा अरसिकके सन्मुख अच्छी २ बातें कही जावें और वह न उसे समझे न उससे प्रेम करे जिससे कहनेवाले का परिश्रम व्यर्थ जावे तब ऐसा कहा जाता है ॥

To deal fool's dole.

६५ (टुडील फूल्स डोल) घर बेचकर यात्रा करना ॥ जो आदमी किसी कामका परिणाम जानता है कि बुरा होगा क्योंकि अभी इसकें करनेमें असमर्थ है उतने परभी उसी कामको करनेके लिये सर्वस्व खोकर कष्ट उठावे तब ऐसा कहते हैं ॥

इति द्वितीय कुसुम ।

काम करनेकी रीति ज्ञात न होनेपर जब कोई उसके करनेको आगे २ दौड़ताहै तब ऐसा कहा जाताहै ॥

५ आगुली चार्टे पेट भराय ॥ जब क्रमशः थोड़ा २ एकत्र करनेसे कुछ समयमें अधिक (समूह) होजाताहै तो ऐसा कहा जाताहै ॥

६ आंखने नहीं गमें, तोह्योंने शूंगमें ॥ जब कोई पदार्थ देखनेमें अच्छा नहीं लगता और उसका उपभोग करना आवश्यक होताहै तो ऐसा कहा जाताहै

७ चड़तो पहाड़ो पगपर लेवों नहीं ॥ कोई उपद्रव अपनेही हाथ अपने ऊपर जब कोई डाल लेता तब ऐसा कहा जाताहै ॥

८ ऊजड़ गाममी अरैंड़ो प्रधान ॥ किसी उत्तम पदार्थकी अस्तत्वतामें जब मध्यम तथा निकृष्टको मान मिलताहै तब ऐसा कहा जाताहै ॥

९ ऊपर वागा, ने मांहें नांगा ॥ जब कोई ऊपर तो बड़ी टीपटाप रखताहो परभीतर खाली खोखलाहो तब ऐसा कहतेहैं ॥

१० ऊंघतानों पाडो, ने जागतानी पाडी ॥ किसी कार्य जो सावधान रहता वह लाभ पाता और जो आलस्य करता वह हानि उठाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

११ ऊंघता सिंहने, जगाड़वो ॥ जब प्रबल शत्रुको जो अपनी ओरसे अचेतहो स्वतः चैतन्य करे तब ऐसा कहतेहैं ॥

१२ ऊंटने शिंग, जोइये नथी आंख्यां ॥ जो कोई किसी विषयमें असंभव संयोग मिलाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१३ एक अंगारो, सोमन जारवाये ॥ एक तेजस्वी अपने तेजद्वारा जब सैकड़ोंको पराजित करताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१४ एकना पागड़ी, बीजाने पहेरावबी ॥ जब एकके जिम्मेका काम दूसरेके जिम्मे किया जाय तब ऐसा कहतेहैं ॥

१५ एक कोहेली मछली, आखा तालावने गंधेलुं करे ॥ समाजमें जब एक दोषीके कारण सब दोषी ठहराये जातेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

१६ एक डूबताँ, बीजाने डुबाड़े ॥ जो आदमी अपना नुकसान होनेपर दूसरेकाभी नुकसान होना विचारतेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

१७ एक लिख्यानें, सौ बक्या ॥ जब किसी लिखीहुई बातके विरुद्ध कोई जबानी सौ प्रमाणभी देताहै पर नहीं माने जाते तब ऐसा कहतेहैं ॥

१८ एवूं शोनुं शूं कामपहरिये के कानटूटे ॥ जब कोई आदमी बहुमूल्य और अच्छा पदार्थ दुःख होते हुएभी ग्रहण करताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१९ अंधा आंगळ आरसी, नेवहरा आंगल गान ॥ मनुष्यमें जिसके गुण पहचाननेकी शक्ति नहीं और वह गुण उसके सन्मुख प्रकाशित किया जावे जिसे वह कुछभी समझे तब ऐसा कहतेहैं ॥

२० अंधे मुल्ला, ने फूटी मसजिद ॥ जैसेको तैसा संयोग मिलजाता तहाँ ऐसा कहतेहैं ॥

२१ कमजोर, ने गुस्सा बोत ॥ जब निर्बल आदमी लड़कपनकी बातें करता तब ऐसा कहतेहैं ॥

२२ कथा सांभळी फूट्या कान ॥ तेयुन आयो ब्रह्मज्ञान ॥ जब सदैव चिक्षा लेते २ या शास्त्र सुनते २ कुछ असर नहीं होता तब ऐसा कहतेहैं।

२३ कहवां करतां, करवुं भलूं ॥ जो मनुष्य वार २ कहतेहैं किमैं अमुक काम करूंगा पर नहीं करते तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२४ कहवुं थोडूं, करणूं घणू ॥ जो आदमी कहते तो बहुतपर करते थोड़ाहैं उनके शिक्षार्थ यह कहावत कही जातीहै ॥

२५ कर्णा आना आपर्थी, कई बरसाद अटके जो होनाहै वह किसीके संकल्प बिकल्पसे नहीं मिटती अथवा कोई उसके न होनेके लिये संकल्प ... करे तोभी ऐसा कहतेहैं ॥

२६ कक्का नामें, केरुन जाणे, नें हूं मोटो विद्वान ॥ जो किसी विषयमें कुछ तो जानतेही नहीं परंतु बड़े ज्ञाताबने फिरतेहैं उनके लिये ऐसा कहा जाताहै ॥

२७ काने झाल्या, हाथीया नरहे ॥ जब कोई छोटा आदमी तुच्छ प्रयोजनमें बड़ेको दबाना चाहता तब ऐसा कहतेहैं ॥

२८ कुठाम गुंमडोंने ससुरवैद ॥ जहाँ किसी बातके कहनेका तो अवसर नहीं और कहे बिना चलता नहीं अथवा दुःख उठाना पड़ताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२९ कुतरांनी पुंछडी बांकी नेबांकी ॥ किसी आदमीके सुधारनेको जब बहुत उपाय निष्फल जातेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

३० कीड़ी सांचरे, ने तीतर खाय ॥ जब

किसीके बड़े परिश्रमका कमाया द्रव्य बलवान् वैरी छीनलेवे तब ऐसा कहते हैं ॥

३१ खेती धनकी नाश, जो धनी न होवे पास ॥ जो आदमी दूसरेके भरोसे खेती करके हानि उठातेहैं तब ऐसा कहा जाताहे ॥

३२ खेड़ खातरने पानी, करमने आणो ताणी जब अपने हाथसे बुरा काम करके कोई भाग्यको दोष देताहे तब ऐसा कहतेहैं ॥

३३ खोटो रुपयो चलके घणो ॥ जो मनुष्य दोषी होताहे वह अपने तई अदोषी प्रगट होनेका उपाय करके ऊपरी पन लोगोंको जब अच्छा बतलाताहे तब ऐसा कहतेहे ॥

३४ गाय दोही कुतरीने पावी ॥ जब परिश्रमसे उपार्जन किया हुआ उत्तम पदार्थ उन लोगोंको खिलाया या देदिया जावे जिनसे कुछभी स्वार्थ तथा ... र्थ नहीं होताहे तब ऐसा कहतेहैं ॥

३६ गाय ऊपर पलाण ॥ जब कोई कार्य असं-
भव अथवा विरुद्ध किया जाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३७ गधानी लात थी, गधो न मरी सके ॥
जब बराबरी वालेके द्वारा बराबरी वालाही अधिक
हानि नहीं उठा सक्ता तब ऐसा कहते हैं ॥

चार मलें चोटला, त्यां भांगें ओटला ॥ जहाँ
चार आदमी एकत्र होकर मन माना काम करडालते
तब ऐसा कहते हैं ॥

३८ जेनों काम तेनों थाय, बीजो करे तो गोता
खाय ॥ जब कोई मनुष्य अपने उद्यमको छोड दूसरे
के उद्योगको लाभके लिये करता है तो जब उसमें
अनजान होनेके कारण बहुत हानि उठाता है तब
ऐसा कहते हैं ॥

३९ जेनी आंखमा कामलो होय, ते सर्व ठि-
काणें पीलुं देखे ॥ जो जैसा होता है सबको वैसाही
समझता है तब ऐसा कहते हैं ॥

४० जेनी घण्टी ए दळवुं, तेना छोकराना गी गाववां ॥ जिसकी ओरसे जिसका निर्वाह होता जब वह उसकी प्रशंसा करता है तब ऐसा कहते अथवा जो निन्दा करे तो शिक्षाके लिये ऐसा कहतेहैं

४१ जेनी नियत पाक, तेना म्हों मां खाक ॥ जेनी नियत खोटी, तेना म्हों मां रोटी ॥ जब अच्छे औ सज्जन मनुष्य को हानि होती है पा पेटभर भोजन नहीं मिलता और लुचे लफंगे हलुग पूड़ी उड़ाते हैं (जैसा हालजमाना है) तब ऐसा कहते हैं ॥

४२ जेनुं बोल्युं गमें नहीं, तेनुं काम शुं गमें॥ जब किसीकी बात ही बुरी लगे और कोई कहे कि ... अच्छा लगेगा तब ऐसा कहते हैं ॥

... रांड़े नहीं, नें वैद्य नां मरे नहीं ॥ ... । विद्या द्वारा लोग दूसरोंका तो भला करता ... हानि उठावे तब यह कहावत कहते हैं।

४४ ज्यारे बार वागे, त्यारे लाडना चूल्हा ागे ॥ जो काम समय पर होनेसे प्रिय लगता है वहीं असमय पर होनेसे जब अप्रिय लगता है तब ऐसा कहते हैं ॥

४५ जे बापनों नहीं थाय, ते कोई नो नहीं थाय ॥ जब कोई खास अपनेही आदमीके काम न आवे तब ऐसा कहते हैं ॥

४६ झूटानुं, आयुर्दा चार घडी ॥ जब झूठा आदमी थोडीही देरमें परास्त हो जाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

४७ टाढा लोहीतुं, सुको रोटलो सारो ॥ जब बेना क्लेशके थोडीही प्राप्तिमें संतोष किया जाता तब ऐसा कहते हैं ॥

४८ ठीकरी, घडा ने फोड़े ॥ जब कभी छोटेके द्वारा बड़ेको हानि पहुंचती है या आश्रय दाताकी ओर से हानि पहुंचती है तब ऐसा कहते हैं ॥

८९ डाही सासरे न जाय, गांडी ने शिखाण
दे॥ जब कोई आदमी स्वतः किसी कामको न कर
उसी कामको करनेके लिये दूसरेको शिक्षा देवे त
ऐसा कहते हैं॥

९० तारानुं मौत पाणी मां॥ आदमी जो कु
काम सदैव करता है या जो कु उद्योग जिसका है उसी
के द्वारा वह किसी न किसी दिन हानि पामीत. पाता
है तब ऐसा कहते हैं॥

९१ तूट्या मन, ने वींध्या मोती, फरी ने
संधाया॥ जब दो आदमियोंका दिल बिगड जावेगा
फिर नहीं मिलता तब ऐसा कहते हैं॥

९२ थुकीनु, चाटवु॥ जब कोई आदमी बात
कहकर बदल जाता है तब ऐसा कहते हैं॥

९३ थोडींसे खाना, वड़े सूं रहना॥ जो आ
दमी खाने पीनेमें अधिक व्यय करके अपनी प्रतिष्ठा
े हैं उनके शिक्षार्थ यह कहावत है॥

९४ दमड़ी कीरांई, नें सासू बहूकी लड़ाई ॥ जब थोड़ीसी बातके लिये आपसमें झगड़ा किया जाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

९५ दमड़ीना दश सोगन ॥ जब लोग थोड़ी सी बातके लिये बहुतसी कसमें खाते हैं तब यह कहावत कही जाती है ॥

९६ दरजी मल्यो वाटमां, नेगजने कातर हाथमां ॥ जब मनुष्य अपने कामका हथियार सदैव पास रखता है तब ऐसा कहते हैं ॥

९७ दहाड़े ऊंघे, नेराते जागे } संदेह स्थल व
तेनें चोर पायें लागें ॥ } समय पर जब
कोई चैतन्य रहकर किसीका घात न लगने देवे चाहे सहजमें असावधान रहता हो तब ऐसा कहते हैं ॥

९८ दरदीनीं गत, दरदी जानें ॥ जिसको जिसका मर्म ज्ञात है वही उसको जानता है तब ऐसा कहते हैं ॥

५९ दशेरानां दिवसे घोडु दौड़े नहीं तो श कामनुं ॥ समयपर जो अपना हुनर नहीं बतलाए उसके लिये यह कहावत कहते हैं ॥

६० दहाड़े डोवों नसूझे, नें रातेहीरा पारखे॥ जो साधारण बातको जानता नहीं और कठिन बातको करना चाहे तब ऐसा कहते हैं ॥

६१ दाई अण आगल पेट छुपाववुं ॥ जो आदमी जिस विषयका भली प्रकार ज्ञाता है यदि उसी विषयमें कोई धोखादेवै तो ऐसा कहते हैं ॥

६२ दातारी दानदे, ने भंडारीनां पेटमां दुखे॥ जब दानी दान करताहो और सूम भंडारीको दुखहो तब ऐसा कहते हैं ॥

६३ दूधनुं दूध, नें पाणीनुं पाणी ॥ जहां यथार्थ न्याय होता तहां ऐसा कहा जाता है ॥

६४ दूधत्यां साकर, नें छांछत्यां मीठुं ॥ जिस-कां जिससे मेल सोहता है उसीके साथ मिलाया जाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

६५ दूध पाइने सांप उछेरवो ॥ जो लोग दुष्टको आश्रय देकर वा पालनकरके पुष्ट करता और कभीन कभी उसके द्वारा दुख उठाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

६६ दांतें दरद, नें माथे करज ॥ जिस प्रकार दांतकी पीड़ा वाला सदैव दुखी रहता है उसीप्रकार ऋणी दुखी रहता है यह यथार्थ कहावत है ॥

६७ देखतीं आंखें, कुवांमां पड़वुं ॥ जो जान बूझकर असावधानी करके हानि तथा दुःख पाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

६८ देश मूकिये, परदेश चालनें मूकिये ॥ जब लोग अपना देश छोड़ दूसरे देशमें जाकर वहांकी चाल चलने लगते तब ऐसा कहते हैं ॥

६९ नरेणीतें, नखजकाटे ॥ जिससे या जिसके द्वारा कोई कार्य संपदान होता हो उसके द्वारा न करके दूसरेके द्वारा कोई करे तब ऐसा कहते हैं ॥

७० नवरो नाई, पाटलों मूँडे ॥ आदमी

बेकाम होने पर जब कोई ऐसा काम करने लगता जिससे कुछ लाभ नहीं तब ऐसा कहते हैं ॥

७१ न मामार्थी कहेणो, मामो सारो ॥ किसीके पास कोई पदार्थ अच्छा न हो पर साधार हो तब ऐसा कहते हैं ॥

७२ नागौन्हाय शूं अने निचोवे शूं ॥ जो पदार्थ नहीं उससे जब वही पदार्थ मांगा ऐसा कहते हैं ॥

७३ नाककापीने अशगुन करवां ॥ बुरे करनेको जब कोई महान् कष्ट अंगीकार व तब ऐसा कहतेहैं ॥

७४ पडीगया, तौके, जेवने नमस्कार व जब आदमीसे कोई ऐसा कार्य बन पडता है करनेकी आन्तारिक इच्छा नहीं है ॥ तब वह जान बूझकर करनेका बहाना बनाताहै त कहते हैं ॥

७५ पहेली रातनां मरे, तेनी पाछली रात
कौन रडे॥जब कोई कार्य अति दुखदाई होने पर कोई शान्तिदाता न होनेसे स्वतः संतोप करना पडता तब अथवा कोई ऐसा संयोग होजावे जिसका दुःख लाचार होकर जन्मभर भुगतना पडे तबभी ऐसा कहते हैं

७६ पानी वलोयें माखण न निसरे ॥ जब अयोग्य द्वारा कोई परिश्रम करके भी सुयोग्यफलचाहे तब ऐसा कहते हैं ॥

७७ पित्तलनें, सौ भट्टी मांनाखे, पण सोनुः न थवाय ॥ निकृष्टको उत्तम करनेके लिये कैसा ही कठिन उपाय क्यों न करो पर निष्फल होता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

७८ पीठ पर मारो, पेट पर न मारो ॥ जब किसी अपराधमें ऐसा दंड दिया जावे तो दोषीके भोजन निर्वाहमें बाधक हो तब दयार्द्र चित्त पुरुष ऐसा कहते हैं ॥

ई आदमी छुपी हुई रीतिसे प्रसिद्ध होना चाहता तो क्षार्थ यह कहावत कहते हैं ॥

८४ बलतां मां घी होमवुं ॥ जब किसीके धित होनेपर फिरभी कटाक्षपूर्वक मर्म भेदी वचन हे जावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

८५ बयड़ीनां पेटमां, छोकरूं रहे, पण बात हे नहीं ॥ जिसके पेटमें बड़ी ३ बातें तो रहें पर दी बात न ठहरे तब ऐसा कहतेहैं

८६ बांयड़ी जुवे लावतो, माजुवे आवतो ॥ स्त्री ह देखती कि मेरा पति कुछ लावे और माता देखती मेरा पुत्र कुशलसे आवे एकही विषयमें भिन्न २ गोंके भिन्न२भाव प्रगट करनेके लिये यह कहावतहे

८७ बायडी वगडी तेनों भववगडो ॥ जिसके में कुलक्षणा नारि होनेसे सदैव कलह रहती उसके ये यह कहावतहै ॥

८८ बारह वरसे आवो, बोलों, तारो नवो

९४ वींछू कामंतर न जाने,ने सांपके बिलमां हाथ डालें ॥ जो थोड़ासाभी ज्ञान न रखते हुए बड़े ज्ञानमय विषयमें बैठना चाहते उनके लिये ऐसा कहा जाताहै ॥

९५ वैसवानां डालन कापों, खाओ तेनुं न खोदो ॥ जब कोई कृतघ्नी अपने स्वामी या उपकारीका बुरा करताहै तब यह कहावत शिक्षार्थ कही जातीहै ॥

९६ बे दिल दोस्त दुश्मनकी गरज सारे ॥ जहां दो मित्रोंके दिल जुदे २ होनेसे शत्रुको अवसर मिलजाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

९७ वरेमानी, तेने घरे मानी ॥ जब कोई बात घरके स्वामीको स्वीकार करलेनेसे सबको करना पड़ती तब ऐसा कहतेहैं ॥

९८ वैकुंठ सांकड़ा, ने भगतघनां ॥ थोडे स्थानमें बहुतका समावेश होनेमें जब अड़चन आती तब ऐसा कहतेहैं ॥

१०४ माथे पडी सगा वापनी॥ जब कोई बात बिन बूझकर या अचानक आपडती है और उसे भोगना पड़ता है तब ऐसा कहते हैं॥

१०५ माखी मारवी ने, चढाववी तोय ॥ जब कोई आदमी छोटेसे कामके लिये भारी तय्यारी करे तब ऐसा कहते हैं॥

१०६ माटी मादियाने, वैयर नादिया ॥ जब किसी स्त्री का पति निर्बल दुबला और वह बलवान् हृष्ट पुष्ट होती तब ऐसा कहते हैं॥

१०७ मारी पडौसण चावल छडे ॥ ने म्हारे हाथ फफोला पडे ॥ जब कोई आदमी ऐसी सुकुमारता जनावे जो असंभव प्रतीत हो तब ऐसा कहतेहैं

१०८ रूपनी रड़े, अने कर्मनी खाय ॥ जब कोई खूबसूरत या उद्योगी पुरुष भूखों मरता और कुरूप या शान्तिचित्त भाग्यवशात् आनन्द उडाता है तब ऐसा कहते हैं॥

. वलतुं घर भाडे न लेवुं॥ प्रत्यक्ष
रहाहो जब कोई जान बूझकर उसक
इच्छा करे तब ऐसा कहतेहैं ॥

० भरम भारी. गजऊं (खीसा)
ास कुछभी नहो पर सब लोगोंको उ
भ्रम बनारहे और उसका अन्तभी
ब ऐसा कहतेहैं ॥

१ भांडुआ तें, भीड न भागे ॥ उ
ुरुष तेजस्वीके काम सिद्ध करनेका
तब ऐसा कहते ॥

२ भूस्या कुत्ता काटे नहीं ॥ जो
ाकर बहुत बकबक करलेताहै और
 पीडा नहीं पहुंचाता उसके
चरितार्थ होताहै ॥

माथुं आपे, ते मित्र ॥ जब कोई
जनावे पर आपत्तिके समय मुंह फे
र्यो ॥

१०४ माथे पडी सगा वापनी॥ जब कोई बात
बूझकर या अचानक आपडती है और उसे
ना पड़ता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१०५ मासी मारवी ने, चढाववी तोप ॥ जब
आदमी छोटेसे कामके लिये भारी तय्यारी करे
ऐसा कहते हैं ॥

१०६ माटी मादियाने, वैयर नादिया ॥ जब
स्त्री का पति निर्बल दुबला और वह बलवान्
पुष्ट होती तब ऐसा कहते हैं ॥

१०७ मारी पडोसण चावल छडे ॥ ने म्हारे
फफोला पडे ॥ जब कोई आदमी ऐसी सुकु-
ता जनावे जो असंभव प्रतीत हो तब ऐसा कहतेहैं

१०८ रूपनी रडे, अने कर्मनी खाय ॥ जब
खूबसूरत या उपयोगी पुरुष भूखों मरता और
र या शान्तिचित्त भाग्यवशात् आनन्द उडाता
ब ऐसा कहते हैं ॥

१०९ वणशे खीचड़ी हलावी, वणशे दीकरी भणावीं ॥ जिस तरह खिचड़ी हिलानेसे सुधरती उसी प्रकार पुत्री शिक्षा देनेसे सुधरती है शिक्षार्थ कहावत।

११० शत्रुने रोग, ऊंगता छेदना ॥ जो भाग दुःखदाई हो उसे छुटपनहींमें नाश कर देना नहीं तो बढनेपर दुःख देता है और नाश होना भी कठिन हो जाता है यह शिक्षार्थ कहावत है ॥

१११ शियाल ताणें शीम भली ॥ ने कुतरु ताणें गाम भली ॥ जो जिसका वास स्थान है अन्तमें वह उसी स्थानको अच्छा समझकर जाता है यह यथार्थ कहावत है ॥

११२ शेठ ना साला सौ थवा जाय ॥ को आदमीसे (चाहे लघुतर हो चाहे गुरुतर) सम मैत्री करना चाहते तब ऐसा कहाजाताहै ॥

११३ शेर ना माथे सवाशेर ॥ जबकिसी मर दस्तका मुकाबला ऐसे से पड़जावे जो उससे भी जबरदस्त हो तब ऐसा कहते हैं ॥

११४ सुतार तुं मन बावली ए ॥ जिस पदार्थ किसीका सदैव निर्वाह होता है वह दूसरी बातोंपर यान न करके अपने प्रयोजनीय बात पर ध्यान देता तब ऐसा कहते हैं ॥

११५ सोनुं देखे, मुनिमन चाले ॥ अच्छी स्तु देखकर जब अच्छे २ लोग मोहित हो जाते तब सा कहा जाता है ॥

११६ साठी बुद्धि नाठी ॥ जब जवान आदमीको द्की शिक्षा पसंद नहीं होती तब वह ऐसा कहकर सकी बात काट देता है ॥

११७ सांपनां पग, सांप जाणे ॥ जब किसीका ल उसके सिवायकोई दूसरा नहीं जान सक्ता तब सा कहते हैं ॥

११८ सर्प मरे नहीं, नें लाठी भांगे नहीं ॥ जहां किसी दोमेंसे एककी हानि होकर कार्य सिद्ध

१०९ वणशे खीचड़ी हलावीं, वणशे दीकरी भणावीं ॥ जिस तरह खिचड़ी हिलानेसे सुधरती उसी प्रकार पुत्री शिक्षा देनेसे सुधरती है शिक्षार्थ कहावत

११० शत्रुने रोग, ऊगता छेदना ॥ जो अपना दुःखदाई हो उसे छुटपनहींमें नाश कर देना नहीं तो बढनेपर दुःख देता है और नाश होना भी कठिन हो जाता है यह शिक्षार्थ कहावत है ॥

१११ शियाल ताणें शीम भली ॥ ने कुतरा ताणें गाम भली ॥ जो जिसका वास स्थान है अन्तमें वह उसी स्थानको अच्छा समझकर जाता है यह यथार्थ कहावत है ॥

११२ शेठ ना साला सौ थवा जाय ॥ बड़े आदमीसे (चाहे लघुतर हो चाहे गुरुतर) सम संबंध करना चाहते तब ऐसा कहाजाताहै ॥

११३ शेर ना माथे सवाशेर ॥ जबकिसी जब का मुकाबला ऐसे से पड़जावे जो उससे भी जबरदस्त हो तब ऐसा कहते हैं ॥

१२४ हाथ ना आवेली, बाजी, खोवती नथी॥ मौका पाकर फिर किसी बातको हाथसे जाने न देना चाहिये शिक्षार्थ कहावत है ॥

१२५ हैये छे, पण होठें न थीं ॥ जब कोई बात किसीसे कहना अवश्य होती पर भूलजाती या कहनेके समय ही स्मरण नहीं रहता तब ऐसा कहतेहैं

नीचे लिखी कहावतों का स्पष्ट अर्थ है ॥

१ अकर्मी धणी, वेयर परझूरी
२ आनिमां नाल्यो हाथ न आवे
३ अति वेपारे दीवालुं,ने अति भक्तिये छिनालुं
४ अफीमनों जीवड़ो शाकरमें न जीवे
५ अवसर आवी पद्मनी
६ अंधेरी रातने मग फाटा
७ आजे हंसेने काले रड़े
८ आशिर्वादनों उधारो शो

होता हो वहां जब दोनोंको बचाकर काम साध लिया जाता तो ऐसा कहते हैं ॥

११९ सोनुंने सुगंध होय ॥ जब किसीमें दो उत्तम गुणहों तो ऐसा कहते हैं ॥

१२० हाथे ते साथे ॥ जब पासहीके पदार्थसे आदमीका काम निकलता है तब ऐसा कहा जाताहै॥

१२१ हरि गुणगाती, नें पेटमां काती ॥ जो ऊपर बगुलाभक्त होकर हृदयमें कपटी रहते उनकी समताको यह कहावत कहते हैं ॥

१२२ होठ बाहिर, ते कोट बाहिर ॥ जब कोई बात मुंहसे निकलतीहै कि फिर उसका फेलना नहीं रुकसक्ता जब कोई आदमी दूसरेसे मनकी बात कहकर चाहतेहैं कि दूसरोंपर प्रगट नहो तब ऐसा कहा जाताहै

१२३ हाथी पछवाडे, कूतरा भूस्याज करे ॥ . बडे आदमीका कई तुच्छ शत्रु कुछभी नहीं ... तब ऐसा कहा जाता है ॥

२४ काम कामने शिखावे
२५ कौणना जोड़ा कौणना पगमां
२६ कोळ नूं काम पड़्यो, त्यारे डूंगरपर चढबेठो
२७ गगन साथे वात करवी
२८ गधा पचीसीमें पड़शे, त्यारे खबर पड़शे
२९ गोर होय, त्यां मक्खी आवे
३० घणो घस्यांथीं चंदनतें आग नीसरे
३१ घर धणीने कहे जाग, नें चोरने कहे मूंस
३२ घेर घट्टी, नें पर घेर दळवां जाय
३३ जीभ मां जहर, ने जीभमां अमृत
३४ जूंआके भयतें लुगड़ो न काढ़ीन खाय
३५ जेनां ऊपर पड़े ते जाणे
३६ जेनां हाथ ऊपर तेना बोल ऊपर
३७ जे सारं नहीं करे ते मित्रकरे
३८ जे सूरज पर धूल छांटेते पो तेज छंटाय
३९ टकोले नें पंचमा गिण

९ आवाने ईटमारे, तो पण फल आपे
१० आखो दहाड़ो नागो, ने जी मती वखत
११ आखो लाडू कई इकदमन खवाय
१२ आगे ओढे घूंगटो ताणे, ताके लक्षण कोई वाणी
१३ आचार पण विचार नहीं
१४ आणुं करवा गयो,ने वहू भूल आव्यो नजाने
१५ ईजार पहेरे, ते पेशावनी जगा राखीने
१६ उसको तो दोसींग था
१७ उलटी गंगा चालवी
१८ ऊंट तोलाय, त्यांगधेड़ा धड़े जाय
१९ एकज लाकड़िये सौने हाकवूं
२० कन्या पारको धनछे
२१ कागड़ो, कोयल ने हँसे
२२ काणी सहेवाय, पण फूटी न सहेवाय
२३ काम परथे कारकून उतर्यो,कोंडीनो

२४ काम कामने शिखावै
२५ कौणना जोड़ा कौणना पगमां
२६ कोल नूं काम पड़चो, त्यारे डूंगरपर चढबैठो
२७ गगन साथे वात करवी
२८ गधा पचीसीमें पड़शे, त्यारे खबर पड़शे
२९ गोर होय, त्यां मक्खी आवे
३० घणों घस्यांथीं चंदनतें आग नीसरै
३१ घर धणीने कहे जाग, नें चोरने कहे मूंस
३२ घेर घट्टी, नें पर घेर दलवां जाय
३३ जीभ मां जहर, ने जीभमां अमृत
३४ जूंआके भयतें लुगड़ो न काढ़ीन खाय
३५ जेनां ऊपर पड़े ते जाणे
३६ जेनां हाथ ऊपर तेना बोल ऊपर
३७ जे सारं नहीं करै ते मित्रकरै
३८ जे सूरज पर धूल [illegible] छंटाय
३९ टकोले नें

४० डाह्यो कागड़ो नर्क ऊपर जाइने बेठे
४१ डांवां कान नीवात जमणांने जणाववी ..
४२ डाभकी अणीपर पानी केटली
४३ तेरे मुंहपर तेरी, ने मेरे वार मुंह पर मेरी नहीं
४४ नरहे आपतो शुं करे माने बाप
४५ नाक ऊपर माखी बेसे तो नाक कापी नाख
४६ निबंधी न्यातमां पंद्रह पटेल
४७ ह्नाता मूते तेने कोण पकड़े
४८ परणीने पाले, नेंकुटुम ने जिमाड़े
४९ पहले लड़ाव्या लाड़, नेपछी भाग्यां
५० पाड़ानी वतावले कांई भेंस जणे
५१ पाड़ानी लडाईमां झाड़ोंना नाश हाय
५२ पेटनी आग पेट जाणे
५३ पोथीमां नारींगणा
५४ प्रीतित्यां पदों कशो, पदोंत्यां प्रीति केशी
[illegible] दुरती छायाछे
[illegible] पेटमाँ सार टके नहीं

दुर्वोधकुष्ठप ।

२४ काम कामने शिखावे
२५ कोणना घोड़ा कोणना पगमां
२६ कोठ नूं काम पड्यो, त्यारे ईश्वर सांभर्यो
२७ गगन साथे वात करवी
२८ गधा पचीशीमें पड्यो, त्यारे लवा लागे
२९ गोर होय, त्यां मक्खी आवे
३० घणी घरवाणी चदनवे आव नीसरे
३१ घर घणीने करे जाण, ने चोरने करे मूंड
३२ घेर घटो, ने घर घर दटवो नाय
३३ जीभ मां जहर, ने जीभमां अमृत
३४ जूआके भयथी लुगडो न काढीन नाय
३५ जेनो ऊपर पडे ते भाणे
३६ जेनो हाथ ऊपर तेना बोल ऊपर
३७ जे धारे नहीं करे ते मित्रके
३८ जे सूरज पर धूळ उछाळे ते पो तेना
३९ टकोडे ने पंचमा मिण

र्ता
कणी
ारी लागे
राखे माथाने
ा वापर्थी
ा

५७ बूढ़ाने बारा बरोबर
५८ वेहाथ वगर ताली न पड़े
५९ बोलतांनां बोर वेंचाय, ना बोलतां
नीं खारक न वेंचाय
६० भलानी दुनियां नथी
६१ भालानीं अणी ने चोरुयानीं कणी
६२ भीतनें पण कान होय छे
६३ भेंसना शींगडा, कई भेंस ने भारी लागे
६४ मसाण ज्ञान
६५ माथुराखे पाघड़ी, ने पाघड़ी राखे माथाने
६६ म्होड़े थी माखी उड़ता नथी
६७ रहे ते आपथीं, ने जाय ते सगा बापथीं
६८ रांडनी बुद्धि
६९ रांडया पछी रांडसे मरे,ने रांध्या पछी चूल्हो
संभरे
७० रांध्या फेर न रंधाय
७१ ... रदे नदी

४० डाह्यो कागडो नर्क ऊपर जाइने बेठे
४१ डांबा कान नीवात जमणांने जणाववी
४२ डाभकी अणीपर पानी केटली
४३ तेरे मुंहपर तेरी, ने मेरे वार मुंह पर मेरी नह
४४ नरहे आपतो शुं करे माने बाप
४५ नाक ऊपर माखी पैसे तो नाक कापी नार
४६ निबंधी न्यातमां पंद्रह पटेल
४७ न्हाता मूते तेने कोण पकडे
४८ परणीने पाले, नेंकुटुम ने जिमाडे
४९ पहले लड़ाव्या लाड़, नेपछी भार्या
५० पाड़ानी उतावले कांई भैंस जणे
५१ पाड़ानी लडाईमां झाड़ोंना नाश हाड़
५२ पेटनी आग पेट जाणे
५३ पोथीमां नारींगणा
प्रीतित्यां पर्दा कैसो, पर्दात्यों प्रीति कैसी
फरती छायाछे
पेटमाँ खीर टके नहीं

५७ बुढाने घाणा दांदर
५८ बेहाप घनर नार्टी न टके
५९ बोडतानी घोर बेचाय, ना बांडनी नीं गाफ न बेचाय
६० भटानी दुनिया नथी
६१ भाडानीं अर्णा ने घोड़ानी फर्णा
६२ भीतने पन कान होय छे
६३ भेंसना शींगडा, फई भेंस ने भारी थाये
६४ मशाण ज्ञान
६५ माथुराने पापडी, ने पापडी खाने पापाने
६६ म्होढे थी मार्या टडता न थी
६७ रहे ते आपथीं, ने जाय ते सगा बापथीं
६८ रांडनी बुद्धि
६९ रांडया पछी रांडसे भेरे,ने रांध्या पछी भूल्यो संभरे
७० रांध्या फेर न रंधाय
७१ राध्यु धान रहे नहीं

७२ राम तुं राज
७३ रोये थे राज्य न मिले
७४ लंका वारीने, हनूमान अलग ना अलग
७५ लक्ष्मी चंचल जातछे
७६ वखत एवी वात
७७ व्यापार वधंती लक्ष्मी
७८ शाकर के खानार तो बहुत पर जहरका कौन
७९ शियाला भोगीनो, ने उनाला जोगीनो
८० शिखीने कोऊ अवतरो न थी
८१ सुकुमार राणीने पादतां प्राण जाय
८२ सोनेनी कटारी, पेटमां न मारी जाय
८३ हाड़ सलामत, तो मास घणो आवशे
८४ हाड़ियो वैसे त्यां विष्टा करे
८५ हाथ ना आलसे, मूंछे मुंह मां जायँ
८६ हिये होय ते ओठें आवे
हैये होली, होठें दिवाली, शूंकामनी

इति तृतीय कुसुम

चतुर्थकुसुम।

संस्कृत।

१ अभ्यास कारिणी विद्या ॥ (कोईभी विद्या अभ्यास रखनेसे बनी रहती या बढ़तीहै) जब कोई काय साधन यत्न जो एकबारका सीखाहुआ काम करते २ अधिक बढ़ता या सुधरता जाता तब ऐसा कहतेहैं

२ अति सर्वत्र वर्जयेत् ॥ (अधिकतासे कोईभी कार्य करना रोका गयाहै) जब कोईभी कार्य आधिक्यता पूर्वक करनेसे हानि अथवा लज्जा उठाना पडती तब ऐसा कहतेहैं ॥

३ अव्यवस्थित चित्तानां प्रसादोपि भयंकरः। (जिसक [illegible] चित्त अस्थिरहै उसकी प्रसन्नतामेंभीडर [illegible] ॥ [illegible] जिनका चित्त स्थिर नहीं वे [illegible] हो [illegible] कभी अप्रसन्न होकर [illegible] ॥

चतुर्थकुसुम।

संस्कृत।

१ अभ्यास कारिणी विद्या ॥ (कोईभी विद्या अभ्यास रखनेसे बनी रहती या बढ़तीहै) जब कोई काय साधन यत्न जो एकबारका सीखाहुआ काम करते २ अधिक बढ़ता या सुधरता जाता तब ऐसा कहतेहैं

२ अति सर्वत्र वर्जयेत् ॥ (अधिकतासे कोईभी कार्य करना रोका गयाहै) जब कोईभी कार्य आधिक्यता पूर्वक करनेसे हानि अथवा लज्जा उठाना पडती तब ऐसा कहतेहैं ॥

३ अव्यवस्थित चित्तानां प्रसादोपि भयंकरः। (जिसका चित्त अस्थिरहै उसकी प्रसन्नतामेंभीडर उपस्थित होताहै ॥ बहुधा जिनका चित्त स्थिर नहीं वे कभी तो प्रसन्न होजाते और कभी अप्रसन्न होकर बुरा कर बैठतेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

करताहै) जिसका जो स्वाभाविकगुण तथा वृत्ति नहीं छूटकर दृढ़ बनी रहती तब ऐसा कहतेहैं ॥

१० गजानां पंक मग्नानां, गजा एव धुरन्धराः॥ (चूहेकी खालसे नगारा नहीं मढ़ा जाता) जब कोई छोटा मनुष्य बड़ेके कार्यकी सिद्धिके लिये प्रयत्न करता पर निष्फल जाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

११ गतानुगतिको लोकाः ॥ (परंपराकी चाल) जब मनुष्य अपने पूर्वजोंकी चालपर जो चाहे कैसी-भीहो चलते जाते तब ऐसा कहा जाताहै ॥

१२ गर्दभानां मिष्टान्न पानं किम् ॥ (गधेको मिठाई खिलाना) जो जिसके गुणागुणसे अज्ञातहै उसके सन्मुख परिश्रम तथा व्यय जब व्यर्थ जाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

१३ छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति (एक दोषमें बहु दोष) जहाँ एक अनुचित बातने घर करलियाहो वहाँ सूक्ष्म दृष्टिसे देखनेमें बहुतसी बातें आने लगतीं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

अवस्थामें अधिक होकरभी कुछ नहीं करसक्ता पर छोटी अवस्था वाला अपने दैव तथा प्रयत्न द्वारा सफलीभूत होकर उत्तम गिना जाता तब यह कहावत कहते हैं ॥

१९ नहि वन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसव वेदना (बांझ,पुत्रोत्पत्ति का दुःख क्या जानें) जब तक जिस पर जो दुःख नहीं बीता तब तक वह उसका मर्मभी नहीं जानता तो ऐसा कहते हैं ॥

२० निजं गुणं मुञ्चति किं पलाण्डुः ॥ (क्या पियाज अपना गुण छोड़ सक्ता है) जब कोई आदमी अपने स्वाभाविक गुणको किसी भी अनोपानसे नहीं छोड़ता तब ऐसा कहते हैं ॥

२१ न मूर्ख जन संपर्कः ॥ (मूर्खकी संगति अच्छी नहीं) जो मूर्खकी संगतिसे दुःख तथा हानि सहता या सज्जनका स्वभाव बिगडजाता तब ऐसा कहते हैं ॥

(कीचडको छूकर धोनेसे न छूना भला है) जिसका परिणाम बुरा है ऐसा काम करना और हानि पाकर फिर उपाय करना जो लोग ऐसा करते हैं उनके लिये यह कहावत है ॥

२७ परोपदेशे, पांडित्यं ॥ जो स्वतः तो कुचलन चलते पर दूसरोंको शिक्षा देनेमें चतुर हैं उनके लिये यह कहावत है ॥

२८ प्रथम ग्रासे मक्षिका पातः ॥ (पहिले ग्रासमें मक्खी गिरना) जब कामके आरंभहीमें कुछ असगुन अथवा बिगाड होजाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२९ प्रयोजन मनुदिश्य नमन्दोपि प्रवर्त्यते ॥ (बिना प्रयोजन मूर्ख भी कुछ काम नहीं करता) जब कोई आदमी किसी कामको व्यर्थ बतलाते हुए करता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

३० विनाश काले विपरीत बुद्धिः ॥ (नाश होनेके समय उलटी बुद्धि होजातीहै) जब अच्छे २

ही धनहै) जब बडे आदमी अपनी प्रतिष्ठाके
हने सर्वस्व खोना स्वीकार करलेते तब यह कहा-
कही जाती है ॥

३५ मौनं सर्वार्थ साधनम् ॥ (चुप रहनेसे सब
सधतेहैं) जो लोग चुप रहकर अपना भेद किसी
गट नहीं करते उनका कार्य निर्विघ्नता पूर्वक
ा है तब ऐसा कहा जाता है ॥

३६ मणिना भूपितः सर्पः किमसौ न भयं-
ः॥(मणियुक्त सर्प क्या भयंकर नहीं होता) जब
दुष्ट पुरुष ऊपरी सुन्दर आडंबर सहित होताहै
उसकी दुष्टतासे लोग डरतेही रहते हैं तब ऐसा
जाताहै ॥

३७ मतिरेव बलात् गरीयसी ॥ (बुद्धि बलकी
क्षा गुरुतरहै) यदि पुरुष बलवान हो पर बुद्धिमान
तो उसका कार्य जब सिद्ध नहीं होकर बल
र्थक जाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

हैं) जब लोभी मनुष्य दुष्कर्म करनेसे भी नहीं
रता तब ऐसा कहतेहैं ॥

४३ विष वृक्षोपि संवर्ध्य पुनच्छेतुम साम्प्रतम्॥
विषकाभी रोपण किया हुआ वृक्ष कोई हाथसे नहीं
ाटता) जो आदमी अपने द्वारा किसीका रोपण करे
ौर वह रोपण कर्ताके विरुद्ध होजावे तबभी वह
सका बुरा नहीं करता ॥ तब अथवा पुत्र जब
ाता पितासे विरुद्ध होजाते और उनका बुरा करते हैं
ौर माता पिता सदैव स्नेह दृष्टि रखते हैं तब भी ऐसा
हा जाता है ॥

४४ वचने किं दरिद्रता ॥ जब कोई मनुष्य
यपि अंतःकरणसे तो किसीको बुरा जानता है पर
हसे प्रशंसा करता अथवा हृदयमें घृणा करता पर
हसे आदर भाव बतलाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

४५ शुभस्य शीघ्रम् ॥ (अच्छा काम जल्दी
रना) शुभ काममें देर करनेसे बहुधा विघ्न आजाते

९० स्वार्थी दोषन्न पश्यति ॥ (स्वार्थी दोष नहीं देखता) जो लोग अपने प्रयोजनके लिये दूसरे की हानि अथवा दोषपर लक्षनहीं देते तब ऐसा कहा जाता है ॥

९१ सूची प्रवेशो,मुसल प्रवेशा ॥ (सुईके स्थानमें मूसल) जब छोटा कार्य आरंभ करनेपर सहारा मिलनेसे बड़ा काम सिद्ध होजाता तब ऐसा कहा जाता है ॥

९२ सत्ये नास्तिभयं क्वचित् ॥ सत्यमें भय नहीं) जो सच बोलकर सुखी रहते उनके लिये ऐसा कहते हैं ॥

९३ षट्कर्णो भिद्यते मंत्रा ॥ (छः कानसे बात का भेद खुलना) जब दो मनुष्योंसे तीसरेके कान बात पहुंची कि प्रगट होने लगती अथवा स्त्री पुरुष दोनों परकी बात दोमेंसे किसीनेभी तीसरेसे कही कि फिर नहीं रुकसकी तब ऐसा कहा जाता है ॥

८ परान्नं विष भोजनम्
९ परोपकाराय सतां विभूतयः
१० पाखंडा पूजिते लोक, साधु नैवच नैवच्
११ बहुरत्ना वसुन्धरा
१२ मूलं नास्ति कुतः शाखा
१३ विभूषणं मौनं अपंडितानाम्

इति चतुर्थ कुसुम।

५ आँके चूं पिस्तादी
दमश हमामगज पोस्तवर
पोस्त वूद हमचो पियाज (देखनेमें पिस्ता भीतर पियाज) जब किसीका ऊपरी आडंवरतो सुहावना तथा भड़कदार हो पर भीतर उसके विरुद्ध घृणा कारक हो तब ऐसा कहते हैं ॥

६ आफ़तश दर ताखीर ॥ (देरमें हानि) जब किसी काममें देर होनेसे विघ्न आकर सिद्धि नहीं होती तब ऐसा कहते हैं ॥

७ आवाज़े दुहुल अज़ दूर खुशमे नुमायद ॥ (लगें दूरके ढोल सुहावने)जब किसीकी दूरसे अधिक प्रशंसा सुनी जावे पर देखने पर तुच्छ निकले तब ऐसा कहते हैं ॥

८ इलाजे वाक़या पेशज़ वुकूअ वायद कर्द ॥ (पानी पहिले पार बांधना) काम हो चुकनेपर जब पीछे उपाय किया जाता तब ऐसा कहते हैं ॥

९ एक न शुद, दो शुद ॥ एक काम नहीं करना

की अत्यावश्यका है यदि वो कैसाभी मिल जावे और वह उसे पाकर अति संतुष्ट हो महत्व प्रकाश करे तब ऐसा कहते हैं ॥

१४कोह कन्दन,व मूस बरावुर्दन॥(पहाड खोद-कर चूहा निकालना) बहुत परिश्रम थोड़े फलकी प्राप्तिके लिये जहाँ किया जाता वहाँ ऐसा कहते हैं ॥

१५ कारे इमरोज, वफर्दा नवायद गुज़ाश्त ॥ (आजका काम कलको न रख) समय परका काम जब पीछे डाल देनेसे बिगड़जाता है तब ऐसा कहतेहैं

१६ खर्च बअन्दाजे दखल कुन ॥ (आमद-नीको देखकर खर्च) जब कोई आदमी प्राप्तिसे अधिक व्ययकर दुःखी होता तब शिक्षार्थ यह कहावत कहतेहैं ॥

१७ खामोशी अलामते रज़ास्त ॥ (चुप रह-नेसे एक प्रकारकी राज़ी पाई जातीहै तब यह कहावत कहतेहैं ॥

२३ जायगुल गुलवाशो जाय ख़ार ख़ार ॥
मिहरवानीके वक्त मिहरवानी और गुस्सेके वक्त
(गुस्सा) जैसे समयपर वैसाही बर्ताव अथवा जैसेके
साथ तैसे बने रहना यह शिक्षार्थ कहावतहै ॥

२४ जौरे उस्ताद वेः जिमहरे पिदर ॥ बापकी
मुहब्बतसे उस्तादकी सख़्ती अच्छी होती यह यथार्थ
कहावतहै ॥

२५ तन्दुरुस्ती हज़ार नियामत ॥ जब
किसीके पास सर्व सामग्रीहै पर रोगी होनेके कारण
भोग नहीं सक्ता तब ऐसा कहतेहैं ॥

२६ तुख्म तासीर, सुहबत असर ॥ यह
यथार्थ कहावतहै कि हरएकमें बीजकी तासीर और
सुहबतका असर अवश्य रहताहै ॥

२७ ताज़ा खतर नानिही वर दुश्मन जफ़र
याबी ॥ (जबतक जान खतरेमें न डालें,
दुश्मन फतह नहीं होता) जब मनुष्य दुःख तथा

३१ दर अमल कोश, हरचे खाही पोश
काम अच्छाकरो कपडे जैसे चाहे तैसे पहनो, य
यथार्थ कहावतहै ॥

३२ नेकी बरबाद गुनाह लाजिम ॥ जब किसी
काममें भलाई तो दूर रहती पर बुराई मिलती है त
ऐसा कहते ॥

३३ नीम हकीम खतरे जान ॥आधा वैद्य प्रा
देताहै) जो आदमी किसी विषयको पूरा नहीं जान
और उससे वही काम लियाजावे तो अवश्य बिग
जाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३४ नतीजा कार बदका कारबदहै ॥ जब को
दूसरेके साथ बुराई करके आपभी उसकी भो
बुराईका भागी होता तब ऐसा कहतेहैं ॥

३५ पिशाचो पुर शुद बे जानद पीलरा
(मच्छरका हमला हाथीपर) जब तुच्छ आद
बडेको डरानेके लिये उद्यमी होता तब ऐसा कहतेहैं

३१ दर अमल कोश, हरचे खाही पोश ॥ काम अच्छाकरो कपडे जैसे चाहे तैसे पहनो, यह यथार्थ कहावतहै ॥

३२ नेकी बरबाद गुनाह लाजिम ॥ जब किसीके काममें भलाई तो दूर रहती पर बुराई मिलती है तब ऐसा कहते ॥

३३ नीम हकीम खतरे जान ॥ आधा वैद्य प्राण लेताहै) जो आदमी किसी विषयको पूरा नहीं जानता और उससे वही काम लियाजावे तो अवश्य बिगड जाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३४ नतीजा कार बदका कारबदहै ॥ जब कोई दूसरेके साथ बुराई करके आपभी उसकी ओरसे बुराईका भागी होता तब ऐसा कहतेहैं ॥

३५ पिशाचो पुर शुद बे जानद पीलरा ॥ (मच्छरका हमला हाथीपर) जब तुच्छ आदमी बडेको हरानेके लिये उद्यमी होता तब ऐसा कहतेहैं॥

काम करके जो लोग वदनाम होते उनके शिक्षार्थ यह कहावतहै ॥

४० बाद अज मुर्दने सुदरा बनोशदारू॥ मरन पर दवाई भला बुरा काम होचुकने पर जब उपाय निरर्थक जाते या किये जाते तब ऐसा कहतेहैं ॥

४१ महमान अजीजस्त मगर तासिह रोज ॥ (तीन दिनका महमान चौथे दिनका हैवान) पहिले दिनका पाहुना दूजे दिनका भई ॥ तीजे दिनकी वेशरमी चौथे दिन मतगई ॥ जब कोई मनुष्य दूसरेके आश्रय बहुतदिन रहकर अनादरपाता तब ऐसा कहते हैं ॥

४२ मुश्क आनस्त कि खुद बुवोयद, नके अत्तार बुगोयद ॥ श्लोक ॥ नहि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते ॥ जो काम अच्छा है उसकी अच्छाई जब कहकर बताई जाती है तो ऐसा कहा जाता है ॥

करके मोहन भोग उड़ाओ) जो पैसा खर्च न करके आनन्द लूटना चाहते उनके लिये ऐसा कहते हैं ॥

४८ सुलूक आँ चुनाँ कुन बखलके जहाँ ॥ क ख्वाहीके बातों कुनन्द आँ चुनाँ॥ दुनियांमें ऐसा वर्ताव करना जैसा कि औरसे अपने लिये चाहते हो॥ यह यथार्थ कहावत है ॥

४९ हर दरख शिन्द तिलानेस्त ॥ (हरएक चमकने वाली चीज सोना नहीं है) एकही रूपरंगके पदार्थ जब मानमें एक समान नहीं होते तब ऐसा कहा जाता है ॥

५० हरकि कुश्ती गीरस फन्नश विसिया रस्त ॥ (जो लड़ने वाला है उसे दाव बहुत याद हैं) जो मनुष्य जिसकामको करता रहता है उसकी सब प्रकारकी बारीकी जाननेमें भी प्रवीण होजाता, तब ऐसा कहते हैं ॥

९९ हरजाके गुलस्त खारस्त ॥ (जहां फूल तहां कांटा) जो काम सुखके लिये किया जाता और जब उसमें मज़ाकी सज़ा मिलती है तब ऐसा कहतेहैं॥

इति पञ्चमकुसुम।

५ औषधा वांचून खरूज गेली ॥ जिस आपत्तिको उपाय करके दूर करना चाहतेहैं ॥ यदि वह स्वतः दूर होजावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

६ कान द्यावा पण कानू न द्यावा ॥ जो सज्जन पुरुषहै उनका सर्वस्व नष्ट क्यों न होजाय, पर वे अपनी पद्धति नहीं छोड़ते तब ऐसा कहा जाताहै ॥

७ कुऱ्यास खीर आणि गद्धयास चपात्या॥जो जिसके मजेमें नहीं जानता उसको देनेसे जब वह उपकार निरर्थक जाता तब ऐसा कहते हैं ॥

८कोळसा उगाळावा,तितका काळा॥दुष्टकी जितनी अधिक परीक्षा करो उतनी अधिक दुष्टता प्रगट होती है तब ऐसा कहा जाता है ॥

९ खरारा खाजवील,नगारा वाजवील ॥ जो पदार्थ जिसकामकाहै उससे वही लेना चाहिये यह शिक्षार्थ कहावतहै ॥

१५ घेतां दिवाळी, देतां शिमगा ॥ जो लेतेस-
य तो ऐसे रहते कि,कोई जानने भी नहीं पाता पर देते-
क्ति प्रसिद्ध करतेहैं तब ऐसा कहाजाताहै ॥

१६ घरावर नाहीं कौल, रिकामा करी डौल ॥जब
छोटे आदमी बड़ी२ बातें मारते तब ऐसा कहाजाताहै ॥

१७ जशासतसें भेटे आणि मनाचा संशय फिटे॥
जो आदमी जैसा होता वैसे कोही चाहता। और तभी
उसकी इच्छा पूर्ण होतीहै यह यथार्थ कहावतहै ॥

१८ डोंगरचेआँवळे आणि समुद्राचें मीठ ॥जब
एक व्यक्तिको वैसीही दूसरी व्यक्ति मिलजाती तब
ऐसा कहाजाताहै ॥

१९ डगशीलतर, काय बघशील ॥ जो लोग
डरकर कोईकाम नहीं करते तो उनको उसका नती
जाभी मालूम नहीं होता तब ऐसा कहाजाताहै ॥

२० ढोंग धत्तूरा, हातांकटोरा ॥ जो लोग ढोंग

२५ तरवार मारत्याची, विद्या करत्याची ॥ जिसको जिसकार्यका अभ्यासहै तथा साधन जानताहै. वही वो करसक्ताहै या उसके काम आताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२६ थट्टाआधी करूंनये, मग बोम मारूंनये ॥ जो लोग किसीकी मसखरी करके उसके चिड़कने तथा बुरा कहनेसे फिर गुस्सा होने लगतेहैं उनके शिक्षार्थ यह कहावतहै ॥

२७ थोड्याने उदार, व बहुताने कृपण ॥ जो लोग थोडे व्ययके लिये तो कुछ नहीं कहते पर बहुतके लिये चुप रहततेहैं उनकी यथार्थता बतानेको. यह कहावतहै ॥

२८ दोघांचे भांडण, तिसऱ्यासलाभ ॥ जहां दो आदमियोंके झगड़ेमें तीसरेको लाभ होताहै तहां यह कहावत कहतेहैं ॥

२४दिनभर चले अढाई कोस॥ जब आलसी आदमीसे काम पड़जाता या बड़ा काम करना चाहैं और बड़े परिश्रमसे थोड़ाहो तब ऐसा कहतेहैं ॥

२५धन्याला धत्तूरा, चोराला मलीदा ॥ जोलोग परिश्रमकरके धनउपार्जन करते वे मितव्ययी होनेके कारण अच्छी तरह खर्च नहीं करसक्ते पर जिनको मफ्तका मिलजाता वे अन्धाधुन्ध खर्च करके आनन्द उड़ाते तब ऐसा कहाजाताहै ॥

३६ नगाऱ्याचे घाय ॥ तेथें टिमकीचें काय॥ जहाँ बड़ों२को कोई पूछता नहीं वहां छोटे२लोग मान चाहैं तब ऐसा कहतेहैं ॥

३७ पदरचें द्यावें,पण जामिन न व्हावें ॥गांठसे देना पर जामिन न होना, यह शिक्षार्थ कहावतहै ॥

३८फिरेल तो चरेल ॥ जब लोग उद्योग करके अपना पोषण पूर्णता पूर्वक करलेतेहैं तब ऐसा कहाताहै ॥

आदमी अपनी करतूति द्वारा बहुत यशका भागी होता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

४९ हत्ती होऊन लांकडे खावीं, आणि मुंगी होऊन साखर खावी ॥ जो जिसके योग्य काम होता वही करता है तब ऐसा कहा जाता है ॥

इति षष्ठोऽध्यायः ।

इति कहानत कल्पद्रुम समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना-बंबई.